उज्जैन
रविवार
05
जुलाई, 2026
मूल्य- 2 रु.
वर्ष-12
अंक-242
मालवा डिवीजन 402/2024-2026
आर एन आई क्रमांक 2013/57651

दैनिक ब्रह्मास्त्र

3 लोकतंत्र की मजबूत नींव हैं बीएलओ, एसआईआर में मप्र ने किया उत्कृष्ट

7 भारत से वनडे सीरीज के लिए इंग्लैंड टीम घोषित

अमरनाथ यात्रा तीसरा दिन, 9 जुलाई तक रजिस्ट्रेशन स्लॉट फुल

पहलगाम/बालटाल। जम्मू-कश्मीर प्रशासन ने बिना रजिस्ट्रेशन करवाए अमरनाथ पहुंच रहे यात्रियों से कहा है कि वे अपनी यात्रा कुछ दिन के लिए टाल दें। प्रशासन के मुताबिक, 9 जुलाई तक सभी रजिस्ट्रेशन स्लॉट पूरी तरह भर चुके हैं। ऐसे में अगर कोई यात्री बिना रजिस्ट्रेशन बालटाल या पहलगाम रूट से आगे बढ़ने की कोशिश करेगा तो उसे चेक पॉइंट्स पर रोक दिया जाएगा। उसे 9 जुलाई के बाद ही आगे बढ़ने दिया जाएगा। अधिकारियों ने कहा कि रविवार से केवल रजिस्टर्ड यात्री ही कश्मीर की ओर जाने की अनुमति दी जाएगी। बिना रजिस्ट्रेशन वाले यात्रियों को चेक पोस्ट पर रोक दिया जाएगा। उन्हें 9 जुलाई के बाद ही आगे बढ़ने मिलेगा। जम्मू डिविजनल कमिश्नर रमेश कुमार ने कहा कि 3 दिन में 13 हजार से ज्यादा रजिस्टर्ड यात्री बालटाल-पहलगाम रूट से बाबा बर्फानी के दर्शन के लिए बेस कैंप से रवाना किए जा चुके हैं।

अमेरिका 250 साल के लिए टाइम कैप्सूल दफन करेगा

वॉशिंगटन। 4 जुलाई को अमेरिका की आजादी के 250 साल पूरे होने के मौके पर 408 किलो का एक टाइम कैप्सूल जमीन में दफनाया जाएगा। इसे फिलाडेल्फिया के इंडिपेंडेंस नेशनल हिस्टोरिकल पार्क में दफनाया जाएगा और 250 साल बाद यानी 2276 में खोला जाएगा। इसकी जानकारी नेशनल पार्क सर्विस के आधिकारिक रिकॉर्ड में भी दर्ज की गई है, ताकि 250 साल बाद आने वाली पीढ़ियां इसे ढूंढ़ सकें और इसके बारे में जान सकें। इस कैप्सूल में 50 राज्यों और आम लोगों की ओर से चुनी गई यादगार चीजें रखी गई हैं, जिसमें व्हेल की हड्डी, दुनिया के सबसे बड़े जिप्सम रेगिस्तान की रेत, राइट बंधुओं के विमान का कपड़ा, एआई की भविष्यवाणी और कई ऐतिहासिक दस्तावेज शामिल हैं।

टेलीग्राम पर फिल्में-वेब सीरीज फ्री नहीं मिलेंगी

नई दिल्ली। अब टेलीग्राम एप पर फ्री पायरेटेड फिल्में और वेब सीरीज नहीं मिल पाएंगी। केंद्र सरकार ने टेलीग्राम से फिल्मों और ओटीटी कंटेंट के पायरेटेड वर्जन देने वाले चैनल्स और ग्रुप्स को अपने प्लेटफॉर्म से हटाने को कहा है। अब टेलीग्राम एप पर फ्री पायरेटेड फिल्में और वेब सीरीज नहीं मिल पाएंगी। केंद्र सरकार ने टेलीग्राम से फिल्मों और ओटीटी कंटेंट के पायरेटेड वर्जन देने वाले चैनल्स और ग्रुप्स को अपने प्लेटफॉर्म से हटाने को कहा है। सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने आज कंपनी को नोटिस भेजा। मंत्रालय ने कहा कि टेलीग्राम अगले 15 दिन में पायरेटेड कंटेंट पर लिए एक्शन की रिपोर्ट सौंपे। एप को 3 दिन में सरकार का दूसरा नोटिस मिला है।

राम मंदिर चढ़ावा चोरी पर बीजेपी अध्यक्ष बोले- दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा

लखनऊ। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन ने राम मंदिर चढ़ावा चोरी पर शनिवार को कहा- जो हुआ, वह गलत हुआ है। इससे जनता में गलत संदेश गया है। यह विपरीत परिस्थिति है। विपक्ष को मुद्दा मिल गया है। प्रदेश सरकार कार्रवाई कर रही है। दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा। विधायक, सांसद और मंत्रियों को इस पचड़े में नहीं पड़ना है। उन्होंने लखनऊ के होटल ताज में भाजपा के सांसदों, विधायकों और मंत्रियों की बैठक की। उन्होंने कहा- सांसदों और विधायकों के बीच टकराव और ईगो के कारण पार्टी को चुनाव में नुकसान होता है। विधायकों और सांसदों ने जिले-जिले में गुट बना रखे हैं, इससे पार्टी का कामकाज प्रभावित होता है। मनमुटाव छोड़कर समन्वय से काम करें। आज, रविवार को अपने दौरे के दूसरे दिन नितिन नवीन एनडीए के घटक दलों के साथ बैठक करेंगे।

अफेयर के शक में बहन की गोली मारकर हत्या की

मेरठ। मेरठ में अफेयर से नाराज भाई ने 21 साल की बहन की शनिवार सुबह 6 बजे हत्या कर दी। उसने बहन के सिर में गोली मारी। वारदात के बाद भाई घर में छिप गया। गोली की आवाज सुनकर मां दौड़कर पहुंची तो बेटी खून से लथपथ फर्श पर पड़ी थी। घरवाले लड़की को लेकर जगदंबा अस्पताल गए। बेटे को बचाने के लिए मां ने डॉक्टरों को बताया कि बेटी की गिरने से चोट लगी है, लेकिन गनशॉट होने पर डॉक्टरों ने पुलिस को सूचना दे दी। हालांकि इलाज के दौरान अक्सा की मौत हो गई। इधर, पुलिस जांच-पड़ताल में पता चला कि भाई आरिश (23) ने ही वारदात को अंजाम दिया है। पुलिस ने उसे घर से गिरफ्तार कर लिया। उसकी निशानदेही पर 315 बोर का तमंचा भी बरामद किया गया है।

खामेनेई की विदाई में काले कपड़े पहने लाखों लोग पहुंचे

तेहरान। ईरान के पूर्व सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह अली खामेनेई को आखिरी विदाई देने के लिए शनिवार को लाखों लोग तेहरान के ग्रैंड मोसल्ला में जुटे हैं। शिया परंपरा के मुताबिक काले कपड़े पहने लोग छाती पीटकर मातम मनाते दिखे। इस दौरान लोगों ने खून बहेगा, अमेरिका मुर्दाबाद और बदला, बदला जैसे नारे भी लगाए। तेहरान में 3 जुलाई से खामेनेई के अंतिम संस्कार से जुड़ी रस्में शुरू हो गई हैं जो 9 जुलाई तक चलेगी। कल शुक्रवार को कार्यक्रम में 100 से ज्यादा देशों के प्रतिनिधि शामिल हुए। हालांकि रूस, चीन, भारत और तुर्किये जैसे देशों के टॉप लीडर्स ने इससे दूरी बरती।

बिना भवन के चल रहा अस्पताल, 87 पदों पर ट्रांसफर-पोस्टिंग का खेल

इंदौर में कागजों पर चल रहा 100 बिस्तर वाला अस्पताल

अस्पताल बनने से पहले ही डॉक्टर, नर्स, फार्मासिस्ट और दूसरे कर्मचारियों की नियुक्तियां कर दी

ब्रह्मास्त्र ▸▸ इंदौर

एमपी अजब है सबसे गजब है। यह कहावत ऐसे ही नहीं कही जाती है। क्योंकि आए दिन इस तरह के कारनामें सामने आते रहते हैं। जिससे व्यवस्था की हकीकत पता चलती है। देश के सबसे साफ शहर इंदौर से ऐसा ही एक कारनामा फिर से सामने आया है। यहां के खजराना इलाके में 6 साल पहले सरकार ने एक आधुनिक सिविल अस्पताल बनाने की घोषणा की थी। अब तक अस्पताल के लिए न तो जमीन तय हुई है और न ही भवन बनाने का काम शुरू हुआ है। लेकिन हैरान करने वाली बात यह है कि अस्पताल बनने से पहले ही यहां डॉक्टर, नर्स, फार्मासिस्ट और दूसरे कर्मचारियों की नियुक्तियां कर दी गई हैं। खास बात यह है कि इन पदों पर पिछले कई सालों से ट्रांसफर और पोस्टिंग भी हो रही हैं। ऐसे में मामला सामने आने के बाद अब सवालियां निशान खड़े हो रहे हैं।

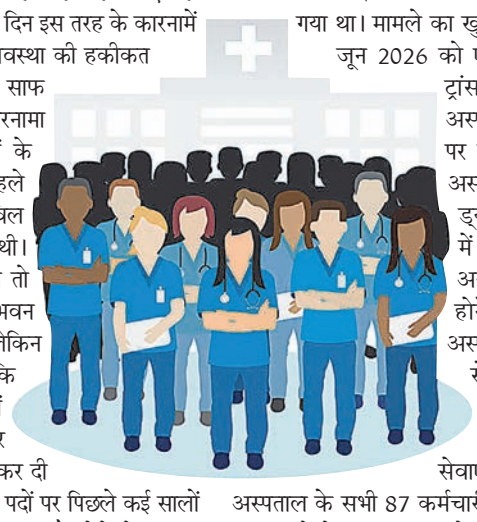

इंदौर में 2020 में इस अस्पताल को मंजूरी मिली थी। जिसके बाद से अब तक इस पर ध्यान नहीं दिया गया था। मामले का खुलासा तब हुआ जब 15 जून 2026 को एक लैब टेक्नीशियन के ट्रांसफर का सिविल अस्पताल खजराना के नाम पर किया गया। लेकिन जब अस्पताल ही नहीं है तो ड्यूटी कहा होगी। पड़ताल में पता चला कि खजराना अस्पताल की बिल्डिंग नहीं होने की वजह से इस अस्पताल के स्वीकृत स्टाफ से इंदौर की पीसी सेठी अस्पताल और हुकुमचंद अस्पताल में अपनी सेवाएं दे रहा है। खजराना अस्पताल के सभी 87 कर्मचारी इंदौर की अलग-अलग अस्पतालों में अपनी ड्यूटी दे रहे हैं।

सरकारी पोर्टल पर दर्ज है अस्पताल

बताया जा रहा है कि खजराना का यह अस्पताल सरकारी पोर्टल्स पर बना हुआ है। इसी पर अस्पताल में तैनात सभी 87 कर्मचारियों की ट्रांसफर और पोस्टिंग होती रहती है। पोर्टल पर यह अस्पताल पूरी तरह से चालू हालत में है। खजराना इलाके में बनने वाली इस अस्पताल से 3 लाख की आबादी को फायदा मिलना था। इससे खजराना, मूसाखेड़ी, तेजाजी नगर, बिचोली हप्सी और आस-पास के इलाकों के तीन लाख से ज्यादा लोगों को फायदा होने की उम्मीद थी। लेकिन जमीन पर अस्पताल का नामोनिशान तक नहीं है। अगर यह अस्पताल सच में बनती तो दूसरी बड़ी अस्पतालों का बोझ कम होता।

कांग्रेस विधानसभा में उठाएगी मुद्दा

इस मामले में कांग्रेस ने सरकार पर निशाना साधा है। कांग्रेस ने इसे प्रशासनिक विफलता का गंभीर मामला बताया है। पूर्व मंत्री सज्जन सिंह वर्मा ने उच्च-स्तरीय जांच की मांग करते हुए आरोप लगाया कि यह एक बड़ा घोटाला है। उन्होंने कहा यह अजीब स्थिति है कि जमीन पर अस्पताल का कोई अस्तित्व नहीं है, फिर भी वहां कर्मचारियों की तैनाती और यहां तक ??कि तबादले भी किए जा रहे हैं। कांग्रेस विधानसभा के आगामी सत्र में सदन में इस मुद्दे को जोर-शोर से उठाएगी। फिलहाल इंदौर का यह मामला चर्चा में बना है।

उपमुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ला का बयान

एमपी के उपमुख्यमंत्री और स्वास्थ्य मंत्री राजेंद्र शुक्ला ने कहा कि समय के साथ मूल प्रस्ताव में बदलाव आया है। उनके अनुसार, जो पहले एक शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र था, उसे बाद में 50-बिस्तर वाले सिविल अस्पताल में अपग्रेड किया गया, लेकिन सही जमीन न मिलने के कारण निर्माण काम शुरू नहीं हो सका था। उन्होंने कहा कि मंजूर किए गए पद अभी भी विभागीय पोर्टल पर दिख रहे हैं। सीएमएचओ पैरामेडिकल स्टाफ को पास के संजीवनी क्लीनिक में अटैच कर सकते हैं। हम 50-बिस्तर वाले अस्पताल के लिए जमीन की तलाश कर रहे हैं। उन्होंने यह भी बताया कि कर्मचारियों को इंदौर में दूसरी जगहों पर खाली पदों पर एडजस्ट किया गया है। इंदौर के मुख्य चिकित्सा और स्वास्थ्य अधिकारी डॉ। माधव हसानी ने भी पुष्टि की कि अस्पताल के साथ पद भी मंजूर किए गए थे।उन्होंने कहा कि विभाग समय पर सही सरकारी जमीन नहीं होने की वजह से अब तक काम शुरू नहीं हो पाया है।

भूख हड़ताल पर बैठे सोनम वांगचुक हुए नाराज, सामने आया भावुक वीडियो

'यहां लोग दूंस-दूंसकर खा रहे'

ब्रह्मास्त्र ▸▸ नई दिल्ली

कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) का प्रदर्शन जंतर मंतर पर शुक्रवार को 14वें दिन भी जारी रहा। इस आंदोलन के समर्थन में सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक लगातार छठे दिन भूख हड़ताल पर बैठे रहे। लगातार उपवास के कारण उनका ब्लड प्रेशर और शुगर लेवल तेजी से गिर रहा है, जिसके चलते डॉक्टरों की टीम लगातार उनके स्वास्थ्य की जांच कर रही है।

प्रदर्शनकारियों को संबोधित करते हुए सोनम वांगचुक ने वहां मौजूद भीड़ पर नाराजगी जाहिर की। उन्होंने कहा कि यहां प्रदर्शन करने वालों से ज्यादा पिकनिक मनाने वाले लोग पहुंच रहे हैं। यहां लोगों को ठूंस-ठूंसकर खाते हुए देखकर दुख होता है। वांगचुक ने तीखा तंज कसते हुए कहा कि ज्यादा खाने वाले लोग मोटे होकर बीमार होंगे और जल्द मरेंगे। इसके साथ ही उन्होंने आंदोलन को गंभीर बनाने की अपील करते हुए कहा कि हर कोई कम से कम एक दिन का अनशन जरूर करे।

कई छात्रों की तबीयत बिगड़ी

लगातार भूख हड़ताल के कारण प्रदर्शन में शामिल कई छात्रों का ब्लड शुगर लेवल कम हो गया है और उनकी तबीयत बिगड़ने लगी है। एक छात्र की हालत ज्यादा खराब होने पर उसे देर रात अस्पताल में भर्ती कराया गया। अभिजीत दीपके ने बताया कि डॉक्टरों की निगरानी में प्रभावित छात्रों का इलाज और प्राथमिक उपचार किया जा रहा है। बड़ी संख्या में छात्रों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और विभिन्न संगठनों की मौजूदगी के बीच प्रदर्शन पूरी तरह लोकतांत्रिक तरीके से चल रहा है। अब सभी की निगाहें इस बात पर टिकी हैं कि सरकार इस मामले पर कब और क्या रुख अपनाती है।

जम्मू-कश्मीर में मुठभेड़ में 2 लश्कर आतंकी मारे गए

ब्रह्मास्त्र ▸▸ शोपियां

जम्मू-कश्मीर के शोपियां के सैदपोरा इलाके में शनिवार शाम से चल रही मुठभेड़ में लश्कर के 2 आतंकियों के मारे जाने की खबर है। सुरक्षाबलों ने इसकी पुष्टि नहीं की है। हालांकि कुछ मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक मारे गए दोनों आतंकी लश्कर-ए-तैयबा के टॉप ऑपरेटिव थे।

एक पहलगाम हमले के बाद बनी हिट लिस्ट में शामिल था, शोपियां में 3 घंटे चला एनकाउंटर

एक आतंकी जाकिर अहमद गनी उन 14 आतंकियों की लिस्ट में शामिल था, जिसे पहलगाम हमले के बाद खुफिया एजेंसियों ने जारी किया था। दूसरा आतंकी जाकिर का साथी लतीफ भट है।

सुरक्षाबलों को शोपियां के सैदपोरा पायीन के पास छानपोरा इलाके में आतंकियों के छिपे होने की खबर मिली थी। घेराबंदी के दौरान जब जवान आतंकियों के ठिकाने के करीब पहुंचे तो उन्होंने फायरिंग कर दी। मुठभेड़ 4 जुलाई की शाम 7:45 बजे शुरू हुई थी। अंधेरे के कारण एनकाउंटर और सर्च ऑपरेशन रात में रोक दिया गया था। अभी तक आतंकियों के शव भी बरामद नहीं हुए हैं। यह ऑपरेशन शुक्रवार दोपहर को शुरू किया गया था, जब सात गांव वाले मीमंदर इलाके के एक बाग में लगे सेना के कैमरे में ये दो आतंकी दिखाई दिए।

केतन की मौत के 17 दिन बाद दादा ने भी तोड़ा दम

ब्रह्मास्त्र ▸▸ पुणे

पुणे के लोहागढ़ किले से गिरकर जान गंवाने वाले केतन अग्रवाल मामले में एक और दुखद घटनाक्रम सामने आया। केतन के 71 वर्षीय दादा देवीचंद अग्रवाल का शनिवार रात निधन हो गया। परिवार का कहना है कि पोते की मौत के बाद से उनकी तबीयत लगातार खराब चल रही थी और उन्हें गहरा सदमा लगा था। इस बीच पुलिस हत्या के मामले की जांच तेज करते हुए मुख्य आरोपी सिया गोयल और सह-आरोपी चेतन चौधरी से जुड़े साक्ष्य जुटाने में लगी है।

परिवार के अनुसार, 71 वर्षीय देवीचंद अग्रवाल का शनिवार रात करीब 9:45 बजे कार्डियक अरेस्ट से निधन हो गया। परिवार का कहना है कि 18 जून को केतन अग्रवाल की मौत के बाद से वह मानसिक रूप से बेहद परेशान थे और उनकी तबीयत लगातार बिगड़ रही थी। परिजनों के मुताबिक, पोते की मौत का सदमा वह सहन नहीं कर सके। उनके निधन से परिवार पर दुखों का एक और पहाड़ टूट पड़ा है। पुलिस के अनुसार, 18 जून को लोहागढ़ किले से गिरने के बाद केतन अग्रवाल की मौत हुई थी, जिसके बाद हत्या का मामला दर्ज किया गया। जांच में पुलिस को संदेह है कि मुख्य आरोपी सिया गोयल इस समय शादी नहीं करना चाहती थीं और उन पर परिवार की ओर से विवाह का दबाव था। पुलिस का मानना है कि इसी कारण कथित साजिश रची गई। हालांकि मामले की जांच अभी जारी है और अंतिम निष्कर्ष आना बाकी है।

ऑस्ट्रेलिया दौरे से पहले पीएम मोदी को धमकी

मेलबर्न मीट्स मोदी प्रोग्राम की फेसबुक पोस्ट में कमेंट कर धमकाया, 9 जुलाई को कार्यक्रम

ब्रह्मास्त्र ▸▸ कैनबरा

पीएम मोदी को ऑस्ट्रेलिया दौरे पर जान से मारने की धमकी मिली है। ऑस्ट्रेलिया की फेडरल पुलिस मोदी को दी गई धमकी की जांच कर रही है। द ऑस्ट्रेलिया टुडे की शनिवार की रिपोर्ट में दावा किया गया कि धमकी फेसबुक पर मेलबर्न मीट्स मोदी कार्यक्रम के प्रचार से जुड़ी एक पोस्ट के नीचे लिखी गई थी।

रिपोर्ट के मुताबिक, पोस्ट के नीचे अबू मुस्तफा नाम के फेसबुक अकाउंट से लिखा गया, स्टेडियम की छत कार्यक्रम के दौरान बंद रहनी चाहिए, नहीं तो वह ऑस्ट्रेलिया अपनी मौत के लिए आएगा। धमकी सामने आते ही जानकारी ऑस्ट्रेलियन फेडरल पुलिस को दे दी गई थी। मोदी 8 जुलाई से 10 जुलाई तक ऑस्ट्रेलिया में रहेंगे। 'मेलबर्न मीट्स मोदी' कार्यक्रम 9 जुलाई को मेलबर्न के मार्वल स्टेडियम में होना है। मोदी को इसमें शामिल होना है।

आईपी एड्रेस की पहचान, कोई गिरफ्तारी नहीं

- जांच एजेंसियों ने प्रोग्राम की पोस्ट से जुड़े आईपी एड्रेस की पहचान कर ली है। हालांकि, अब तक पुलिस ने धमकी पर कोई आधिकारिक बयान नहीं दिया है।
- साथ ही पुलिस ने किसी गिरफ्तारी की पुष्टि भी नहीं की है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, प्रधानमंत्री मोदी के दौरे के दौरान सुरक्षा व्यवस्था में ऑस्ट्रेलिया की फेडरल पुलिस, राज्य पुलिस और विशेष सुरक्षा इकाइयों समेत कई एजेंसियां मिलकर काम कर रही हैं।
- 'मेलबर्न मीट्स मोदी' कार्यक्रम में मार्वल स्टेडियम में ऑस्ट्रेलिया के भारतीय मूल के लोग पीएम मोदी का स्वागत करेंगे। इसका उद्देश्य ऑस्ट्रेलिया में बसे भारतीय समुदाय को पीएम मोदी से जोड़ना और भारत-ऑस्ट्रेलिया संबंधों को मजबूत करना है।

भाजपा सरकार की एथेनॉल नीति

जनता बेहाल, उद्योगपतियों को बंपर मुनाफा

ब्रह्मास्त्र ▸▸ नई दिल्ली

केंद्र की भाजपा सरकार द्वारा देश भर के पेट्रोल पंपों पर 20 प्रतिशत एथेनॉल मिश्रित ईंधन को अनिवार्य रूप से लागू किए जाने के बाद से देश का एक बड़ा उपभोक्ता वर्ग गहरे असमंजस और आक्रोश में है। देश के तमाम छोटे-बड़े शहरों और ग्रामीण इलाकों में इस नीति का जमीनी विरोध अब खुलकर सामने आने लगा है। पर्यावरण संरक्षण और कच्चे तेल के आयात पर निर्भरता कम करके विदेशी मुद्रा बचाने का सरकारी तर्क नीतिगत स्तर पर सुनने में जितना आकर्षक और राष्ट्रहित में लगता है, धरातल पर इसका व्यावहारिक और आर्थिक सच उतना ही कड़वा और चिंताजनक है। भाजपा सरकार के इस महत्वाकांक्षी प्रयोग की पूरी कीमत देश के मध्यम वर्ग और साधारण वाहन मालिकों को अपनी जेब और अपने वाहनों की बबार्दी से चुकानी पड़ रही है।

सड़क पर दौड़ रहे करोड़ों वाहनों, विशेष रूप से अप्रैल 2023 से पहले निर्मित गाड़ियों के इंजन इस रासायनिक बदलाव को झेलने के लिए तकनीकी रूप से सक्षम नहीं हैं। एथेनॉल मूल रूप से एक एल्कोहल है, जिसकी प्राकृतिक विशेषता हवा से नमी (पानी) को सोखने की होती है। इसके परिणामस्वरूप वाहनों की लोहे की ईंधन टंकियों में अंदर ही अंदर जंग लग रही है और ईंधन प्रणाली में प्रयुक्त रबर की नलिकाएं ओ-रिंग और प्लास्टिक के गैस्केट गल कर कड़े हो रहे हैं। इससे न केवल महंगे इलेक्ट्रॉनिक फ्यूल पंप और इंजेक्टर्स समय से पहले चोक होकर दम तोड़ रहे हैं, बल्कि वाहनों में ईंधन रिसाव और अचानक आग लगने का गंभीर सुरक्षा जोखिम भी पैदा हो गया है। मैकेनिकल गैराजों में ऐसी गाड़ियों की बढ़ती कतारें भाजपा सरकार की इस नीतिगत जल्दबाजी की प्रत्यक्ष गवाह हैं।

तकनीकी नुकसान से अलग, आर्थिक मोर्चे पर भी यह आम जनता के साथ एक बड़ा धोखा साबित हो रहा है। शुद्ध पेट्रोल (गैसोलीन) की तुलना में एथेनॉल की ऊर्जा सघनता काफी कम होती है। इसका सीधा और अकाट्य गणितीय असर यह है कि ए20 ईंधन से चलने वाले वाहनों के माइलेज में 5% से 8% तक की भारी गिरावट दर्ज की गई है। उपभोक्ता पेट्रोल की पूरी और आसमान छूती कीमत चुका रहा है, लेकिन उसे माइलेज कम मिल रहा है। यानी, दाम पूरे पेट्रोल के और माइलेज कम—यह उपभोक्ताओं पर भाजपा सरकार द्वारा डाला गया एक परोक्ष वित्तीय बोझ नहीं तो और क्या है? देश की जनता, जो पहले से ही महंगाई से जूझ रही है, अब गाड़ी के घटते माइलेज और बढ़ते मेंटेनेंस खर्च की दोहरी मार झेलने को मजबूर है।

पानी का बड़ा संकट

इस पूरे खेल का सबसे क्रूर और विचलित करने वाला पहलू इसका असमान सामाजिक और आर्थिक ढांचा है। एक तरफ देश के टू-व्हीलर और कार मालिक अपने इंजनों की मरम्मत और घटते माइलेज से त्रस्त हैं, तो दूसरी तरफ गन्ना और मक्का से एथेनॉल बनाने वाले चुनिंदा बड़े कॉर्पोरेट घराने, चीनी मिल मालिक और निजी डिस्टिलरीज बंपर मुनाफा कूट रहे हैं। भाजपा सरकार ने इन औद्योगिक घरानों के लिए एक सुनिश्चित बाजार और ऊंचे दामों की गारंटी तय कर दी है, जिसका पूरा वित्तीय बोझ आम जनता की गाढ़ी कमाई को निचोड़कर उठाया जा रहा है। इसके अलावा, एथेनॉल के लिए अत्यधिक जल-खपत वाली फसलों को बढ़ावा देने से भविष्य में भूजल स्तर गिरने का पर्यावरणीय संकट भी अपनी जगह खड़ा है, जो कृषि क्षेत्रों के लिए आने वाले समय में पानी का बड़ा संकट खड़ा कर सकता है।

अंतरराष्ट्रीय मानकों का पालन करना होगा

सच्चाई यह है कि जनता में व्याप्त इस आक्रोश को केवल 'हरित ईंधन' का नारा देकर दबाया नहीं जा सकता। यदि भाजपा सरकार की नीतियां जनहित के प्रति जवाबदेह हैं, तो उसे अंतरराष्ट्रीय मानकों का पालन करना होगा। अमेरिका और यूरोपीय देशों की तरह भारत के भी हर पेट्रोल पंप पर उपभोक्ताओं को 100% शुद्ध पेट्रोल' का अलग विकल्प अनिवार्य रूप से मिलना चाहिए, ताकि पुरानी गाड़ियों के मालिक अपने विवेक से अपने वाहन की सुरक्षा तय कर सकें।

खबर एक नजर...

नौ नारायणों में प्रथम श्री बद्री नारायण मंदिर के नवीन शिखर पर हुई कलश स्थापना, लगा छप्पन भोग

उज्जैन। शहर के पानदरीबा चौराहा स्थित नौ नारायणों में प्रथम श्री बद्री नारायण मंदिर के नवनिर्मित शिखर पर विधि-विधान से कलश स्थापना और ध्वजारोहण संपन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर भगवान को अन्नकूट (छप्पन भोग) अर्पित किया गया, जिसके दर्शन और प्रसादी के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे।

मंदिर के पुजारी पं. शिवनारायण पाठक ने बताया कि शिखर के नवीनीकरण का कार्य स्वर्गीय बलराम जमाना बाई पाठक के सान्निध्य में शुरू हुआ था, जो पूर्ण हो चुका है। इसी उपलक्ष्य में शिखर पर कलश स्थापित कर धर्म ध्वजा फहराई गई। आयोजन के तहत शाम 6 बजे से देर रात तक महाप्रसादी का वितरण किया गया, जिसमें शहर के धर्मप्रेमियों ने उत्साह के साथ प्रसादी ग्रहण की। आयोजन को भव्य और सफल बनाने में शहर के पार्षदों और श्रद्धालुओं का विशेष योगदान रहा। श्री बद्री नारायण पुजारी परिवार और पं. शिवनारायण पाठक ने मंदिर शिखर पर कलश स्थापना, अन्नकूट और महाप्रसाद वितरण में तन-मन-धन से सहयोग करने वाले सभी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सहयोगियों व नागरिकों का आभार व्यक्त किया है।

9 अगस्त को होगी 118 किलोमीटर लंबी चारद्वार साइकिल यात्रा

उज्जैन। सोसायटी ऑफ ग्लोबल साइकिल द्वारा पवित्र श्रावण मास में आगामी 9 अगस्त को बहुप्रतीक्षित 'चारद्वार साइकिल यात्राझ2026' का आयोजन किया जाएगा। संस्था ने शुक्रवार को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर यात्रा का आधिकारिक पोस्टर जारी कर दिया है। 118 किलोमीटर की इस आध्यात्मिक और रोमांचक साइकिल यात्रा का उद्देश्य युवाओं को उज्जैन की सांस्कृतिक विरासत और प्राकृतिक सौंदर्य से जोड़ना है। संस्था के अध्यक्ष उत्कर्ष सिंह सेंगर और सचिव विवेक मेश्राम ने बताया कि यात्रा के दौरान प्रतिभागी पंचकोशी मार्ग पर शिवरूप में विराजमान चार द्वारपालों के दर्शन करेंगे। इनमें उत्तर द्वार के दुर्दुरेश्वर महादेव, पूर्व द्वार के पिंगलेश्वर महादेव, पश्चिम द्वार के बिल्केश्वर महादेव और दक्षिण द्वार के कायावरोहनेश्वर महादेव शामिल हैं।

डॉक्टर्स डे पर समाज सेवा एवं समर्पण के लिए 101 चिकित्सकों का सम्मान

उज्जैन। नेशनल डॉक्टर्स डे के अवसर पर कालिदास अकादमी, उज्जैन में अलख उज्जैनी एवं इलेक्ट्रो होम्योपैथी काउंसिल ऑफ मध्य प्रदेश के संयुक्त तत्वावधान में भव्य सम्मान समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में देशभर से आए विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों के 101 चिकित्सकों का सम्मान किया गया। संगठन के डॉ. ओ.पी. वैष्णव ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मध्यप्रदेश हाउसिंग बोर्ड के प्रदेश अध्यक्ष श्री ओम जैन थे। विशिष्ट अतिथियों में उज्जैन-आलोट सांसद श्री अनिल फिरोजिया, उत्तर विधानसभा क्षेत्र के विधायक श्री अनिल जैन, अलख उज्जैनी के अध्यक्ष एवं भाजपा नगर महामंत्री श्री आनंद सिंह खींची तथा सिविल डिफेंस के डिविजनल कमांडेंट श्री रोहितास पाठक सहित मध्यप्रदेश के 10 से अधिक इलेक्ट्रो होम्योपैथी संगठनों के प्रदेश अध्यक्ष मंचासीन रहे।गणेश वंदना एवं देशभक्ति गीत की प्रस्तुति के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। अतिथियों ने चिकित्सकों की सेवा भावना, समर्पण और समाज के प्रति उनके योगदान की सराहना की।

समाजसेवा को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का लिया संकल्प

उज्जैन। लायंस क्लब उज्जैन सुर मंदिर का संस्थापन समारोह इंदौर रोड स्थित एक निजी होटल में गरिमामय वातावरण में आयोजित किया गया। समारोह में नई कार्यकारिणी का विधिवत संस्थापन किया गया तथा क्लब के पदाधिकारियों ने समाजसेवा और जनकल्याण के कार्यों को प्राथमिकता देने का संकल्प लिया। समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व आयुक्त हीरालाल त्रिवेदी तथा संस्थापन अधिकारी एवं पूर्व डिस्ट्रिक्ट गवर्नर लायन बलबीर सिंह साहनी थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में वाइस डिस्ट्रिक्ट गवर्नर लायन संजय सक्सेना उपस्थित रहे। संस्थापन अधिकारी लायन बलबीर सिंह साहनी ने क्लब के नवनिर्वाचित अध्यक्ष लायन अनिल त्रिवेदी, सचिव लायन प्रेमशंकर जायसवाल, कोषाध्यक्ष लायन मुस्ताक पटेल तथा प्रथम उपाध्यक्ष लायन अरविंद इवांस को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि हीरालाल त्रिवेदी, लायन बलबीर सिंह साहनी एवं लायन संजय सक्सेना ने नई कार्यकारिणी को शुभकामनाएं देते हुए लायंस क्लब के माध्यम से सेवा, सहयोग और सामाजिक सरोकारों से जुड़े कार्यों को निरंतर आगे बढ़ाने का आह्वान किया। कार्यक्रम का आयोजन एमजेएफ लायन सुभाषचंद्र दुबे, चार्टर अध्यक्ष सुरेखा दुबे तथा संयोजक कर्नल राजकुमार सिंह के मार्गदर्शन में किया गया। समारोह में लायंस क्लब उज्जैन सुर मंदिर के अलावा शहर के विभिन्न लायंस क्लबों के पदाधिकारी एवं सदस्य भी शामिल हुए। इनमें राकेश शर्मा, सत्येंद्र श्रीवास्तव, डॉ गौतमशर्मा, लायन संजीव गडकरी, प्रदीप निगम, धर्मेंद्र सराफ, जे.पी. पंचारिया, किरण पंचारिया, अरमान पटेल, श्रीकांत विशंपायन, भूपेंद्र त्रिवेदी, छाया लोखंडे और विनीत लोखंडे प्रमुख रहे।

विद्यार्थी मनमानी छोड़कर कर्तव्य पथ पर चलें तो नहीं होगा

माधव विज्ञान महाविद्यालय में दीक्षारंभ कार्यक्रम का समापन, मप्र गृह निर्माण मंडल अध्यक्ष ने साझा किए अनुभव

ब्रह्मास्त्र ›› उज्जैन

शासकीय माधव विज्ञान महाविद्यालय में नव प्रवेशित विद्यार्थियों के लिए आयोजित दीक्षारंभ कार्यक्रम का समापन मध्यप्रदेश गृह निर्माण मंडल के अध्यक्ष ओम जैन के मुख्य आतिथ्य में हुआ। इस अवसर पर उन्होंने विद्यार्थियों को मार्गदर्शन देते हुए कहा कि निरंतरता, गंभीरता, लक्ष्य के प्रति एकाग्रता और विनम्रता विद्यार्थी जीवन के लिए अति आवश्यक है। मनमानी न करते हुए प्रासंगिक कर्तव्य करेंगे तो जीवन में भटकाव नहीं होगा।

महाविद्यालय के पूर्व छात्र रहे श्री जैन ने विद्यार्थियों के साथ अपने अनुभव भी साझा किए और उनके साथ परिसर में पौधारोपण किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए

प्राचार्य प्रो. हरीश व्यास ने विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम के अध्ययन के साथ ही मानवीय और संस्कारयुक्त बनने के लिए प्रेरित किया। प्रवेश समिति संयोजक प्रो. दीपेंद्र रघुवंशी ने बताया कि इस वर्ष गत वर्ष की तुलना में बेहतर प्रवेश हुए हैं। विगत तीन दिनों में विद्यार्थियों को महाविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों से अवगत कराया गया। इसमें एनएसएस और एनसीसी का परिचय अधिकारी प्रो. आयुषी पालीवाल एवं प्रो. प्रमिला बघेल ने दिया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति और परीक्षा प्रणाली की जानकारी प्रो. कुम्भकार ने दी। सांस्कृतिक व साहित्यिक गतिविधियों की जानकारी हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. शशि जोशी और प्रो. अजय सक्सेना द्वारा दी गई। खेलकूद की जानकारी स्पोर्ट्स अधिकारी, छात्रवृत्ति की जानकारी प्रो. जीवनसिंह सोलंकी, पर्यावरण संरक्षण, मतदाता जागरूकता व लैंगिक समानता की जानकारी प्रो. प्रदीप लाखरे तथा इको क्लब की जानकारी प्रो. मक्कड़ ने दी। आयोजन के दौरान नव प्रवेशित विद्यार्थियों को महाविद्यालय के विभिन्न विभागों व प्रयोगशालाओं का भ्रमण कराकर विस्तृत जानकारी दी गई। साथ ही उन नवाचार गतिविधियों से अवगत कराया गया जिनके माध्यम से विद्यार्थियों का विभिन्न पदों पर चयन होता है। इस अवसर पर स्टाफ का परिचय भी कराया गया। छात्र राज भोगे ने डॉक्यूमेंट्री के माध्यम से महाविद्यालय का इतिहास प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन प्रो. शशि जोशी ने किया। सरस्वती वंदना छात्र विनय शर्मा ने प्रस्तुत की और आभार प्रो. आयुषी पालीवाल ने माना।

देश की समस्याओं को दूर करने के लिए शिक्षा व्यवस्था में बदलाव जरूरी

सम्राट विक्रमादित्य विवि में शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास का स्थापना दिवस समारोह संपन्न

ब्रह्मास्त्र ›› उज्जैन

आजादी के बाद देश की अधिकतम समस्याओं को दूर करने के लिए शिक्षा व्यवस्था को बदलना बहुत आवश्यक है। देश के विकास के लिए शिक्षा में परिवर्तन हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। यह बात शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार प्रमुख अथर्व शर्मा ने कही। वे शुक्रवार को सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय में आयोजित न्यास के स्थापना दिवस समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में बोल रहे थे। विश्वविद्यालय परिसर में इस दिन को शिक्षा दिवस के रूप में मनाया गया।

समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलसचिव अनिल शर्मा ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभाग कार्यवाह मनीष गोयल और कार्यपरिषद सदस्य वरुण गुप्ता उपस्थित थे। मुख्य वक्ता अथर्व शर्मा ने कहा कि शिक्षा में व्याप्त विकृतियों को दूर करने के लिए 2 जुलाई 2004 को शिक्षा बचाओ आंदोलन प्रारंभ किया गया था। यह केवल छोटी गलतियों के सुधार तक सीमित नहीं था, बल्कि देश की भाषा, धर्म, संस्कृति और महापुरुषों को अपमानित करने के षड्यंत्र को रोकने का एक सफल प्रयास था। इन्हीं सार्थक प्रयासों के परिणामस्वरूप विभिन्न न्यायालयों के 12 निर्णय न्यास के पक्ष में आए। देश की शिक्षा को संस्कृति, प्रकृति और प्रगति के अनुरूप बनाने के लिए 24 मई 2007 को शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास का गठन किया गया।

महाकाल और कालभैरव मंदिर में अवैध वसूली के खिलाफ प्रदर्शन, दी बड़े आंदोलन की चेतावनी

कार्रवाई न होने पर हनुमान चालीसा का पाठ कर जताया विरोध

ब्रह्मास्त्र ›› उज्जैन

अयोध्या के राम मंदिर में 500 करोड़ रुपये की कथित चोरी और उज्जैन के महाकाल व कालभैरव मंदिर में चल रही अवैध वसूली के विरोध में जिला युवा कांग्रेस ने उग्र आंदोलन की चेतावनी दी है। उज्जैन जिला युवा कांग्रेस अध्यक्ष अर्पित यादव के नेतृत्व में कार्यकताओं ने शांतिपूर्ण प्रदर्शन करते हुए हनुमान चालीसा का पाठ किया और दोषियों पर जल्द कार्रवाई की मांग की।

युवा कांग्रेस अध्यक्ष अर्पित यादव ने आरोप लगाया कि खुद को सनातन धर्म की पार्टी बताने वाली भाजपा के राज में उज्जैन से लेकर अयोध्या तक मंदिरों में भ्रष्टाचार हो रहा है। विश्व प्रसिद्ध श्री महाकालेश्वर मंदिर और कालभैरव मंदिर में दर्शनार्थियों से 250 से 500 रुपये तक की अवैध वसूली की जा रही है। मंदिरों में इस तरह की वसूली को एक व्यापार का रूप दे दिया गया है, जिससे आम लोगों की धार्मिक भावनाएं आहत हो रही हैं।

यादव ने कहा कि राम मंदिर में हुई चोरी के मामले में प्रधानमंत्री और अयोध्या प्रशासन द्वारा कोई

ठोस कार्रवाई नहीं की गई। इसी के विरोध में युवा कांग्रेस ने हनुमान चालीसा का पाठ किया है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि उज्जैन के मुख्य मंदिरों में यह अवैध वसूली तत्काल बंद नहीं हुई और दोषियों को सजा नहीं मिली, तो इस आंदोलन को मध्य प्रदेश स्तर तक ले जाया जाएगा। आने वाले दिनों में युवा कांग्रेस द्वारा कलेक्टर कार्यालय और मुख्यमंत्री निवास का घेराव किया जाएगा। इस विरोध प्रदर्शन में मुख्य रूप से यशराज चावड़ा, योगेश दाहिमा, नकुल सिसोदिया, अश्विन मावरी, नंदू गहलोत, सौरभ यादव, यशपाल, सुधीर, अमन रघुवंशी, अरुण पोरवाल, यशवंत मालवीय, गोलू भाई, करण सूर्यवंशी, मयूर तिनखेड़े, आर्यन पटेल, सोनू पवार और मनीष कीर सहित बड़ी संख्या में युवा कांग्रेस के साथी उपस्थित रहे।

दीक्षारंभ में 19 विभागों ने दी करियर की जानकारी, मानसिक स्वास्थ्य पर भी हुई चर्चा

शानदार भविष्य के लिए विद्यार्थी का अनुशासित और लक्ष्यनिष्ठ होना जरूरी

ब्रह्मास्त्र ›› उज्जैन

शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय में शैक्षणिक सत्र 2026-27 के अंतर्गत तीन दिवसीय दीक्षारंभ एवं प्रवेश उत्सव का आयोजन किया गया। इस दौरान स्नातक प्रथम वर्ष एवं स्नातकोत्तर प्रथम सेमेस्टर की नवप्रवेशित छात्राओं का तिलक लगाकर और स्वल्पाहार से स्वागत किया गया। समारोह में छात्राओं को नई शिक्षा नीति, करियर के अवसरों और मानसिक स्वास्थ्य को लेकर विस्तृत मार्गदर्शन दिया गया।

प्रथम दिन उत्कृष्ट संस्था और अनुशासन पर बल

उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि उच्च शिक्षा उज्जैन संभाग के अतिरिक्त संचालक डॉ. एच.एल. अनिजवाल ने कहा कि एक उत्कृष्ट संस्था में प्रवेश से सशक्त नींव पड़ जाती है, लेकिन विद्यार्थी के अनुशासित, जागरूक एवं लक्ष्यनिष्ठ रहने से ही शानदार भविष्य का निर्माण संभव है। अध्यक्षीय उद्बोधन में प्राचार्य डॉ. प्रशांत पुराणिक ने छात्राओं का स्वागत करते हुए नियमित उपस्थिति और सर्वांगीण विकास के लिए प्रेरित किया। आईक्यूएसी समन्वयक डॉ. नीता तपन ने महाविद्यालय को नैक द्वारा ए और ए प्लस ग्रेड प्राप्त होने की उपलब्धि तथा खेल व सांस्कृतिक गतिविधियों की जानकारी दी। डॉ. रेखा शर्मा ने छात्रवृत्ति योजनाओं, डॉ. समीना कुरैशी ने नवीन शिक्षा नीति व प्रवेश नीति तथा डॉ. प्रियंका वर्मा ने अपार आईडी व अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट की जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. राजेंद्र सिंह सोलंकी ने किया और आभार प्रशासनिक अधिकारी डॉ. रश्मि भार्गव ने माना।

सेवानिवृत्त डिप्लोमा इंजीनियर एसोसिएशन की प्रांतीय बैठक में 7 सूत्रीय एजेंडे पर मंथन

12 क्षेत्रीय और 30 जिला समितियों के पदाधिकारी हुए शामिल

ब्रह्मास्त्र ›› उज्जैन

मध्य प्रदेश सेवानिवृत्त डिप्लोमा इंजीनियर एसोसिएशन की त्रैमासिक बैठक 1 जुलाई को नर्मदापुरम में आयोजित की गई। इस प्रांतीय बैठक में प्रदेश भर की 12 क्षेत्रीय और 30 जिला समितियों के पदाधिकारियों ने हिस्सा लिया। बैठक में सात सूत्रीय एजेंडे पर चर्चा की गई, जिसमें उज्जैन जिले और क्षेत्रीय समिति की ओर से 11 पदाधिकारी प्रमुख रूप से शामिल हुए।

कार्यक्रम का शुभारंभ प्रांताध्यक्ष उमेश दुबे ने महान अभियंता एम. विश्वेश्वरैया की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया। स्थानीय जिलाध्यक्ष श्रीवास्तव और क्षेत्रीय अध्यक्ष बरेले ने मंचासीन अतिथियों का पुष्पमालाओं से स्वागत किया। प्रांतीय कोषाध्यक्ष बख्शी ने एसोसिएशन के आय-व्यय का लेखा-जोखा पेश कर सदन से उसका अनुमोदन कराया। बैठक में प्रदेश भर से आए विभिन्न जिलाध्यक्षों ने संगठन की मजबूती और इंजीनियरों के हितों पर अपने विचार व्यक्त किए। इस दौरान उज्जैन क्षेत्रीय समिति से 8 लोगों ने एसोसिएशन की संरक्षक सदस्यता भी ग्रहण की। कार्यक्रम के अंत में प्रांताध्यक्ष उमेश दुबे ने सभी को संबोधित किया। नर्मदापुरम में आयोजित इस प्रांतीय बैठक में उज्जैन से उप प्रांताध्यक्ष गर्ग, प्रांतीय सचिव अशोक श्रीवास्तव, प्रांतीय संगठक आर.एस. भटनागर, क्षेत्रीय अध्यक्ष यू.एस. भटनागर, क्षेत्रीय सचिव टी.यू. कुरैशी, क्षेत्रीय कोषाध्यक्ष सुनील जैन, जिलाध्यक्ष देवेश तिवारी, जिला सचिव महेश सक्सेना, रविंद्र चौरे, के.सी. भारतीय और महेंद्र वर्मा उपस्थित रहे।

पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस माधव महाविद्यालय में दीक्षारंभ समारोह संपन्न

गुरुओं का सम्मान करने से ही जीवन में मिलेगी सफलता

ब्रह्मास्त्र ›› उज्जैन

प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस शासकीय माधव महाविद्यालय में नवप्रवेशित विद्यार्थियों के लिए आयोजित दीक्षारंभ कार्यक्रम का समापन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उज्जैन उत्तर के विधायक अनिल जैन कालूहेड़ा ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए कहा कि यह महाविद्यालय एक अग्रणी और अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शिक्षण संस्थान है। यहां प्रवेश पाना विद्यार्थियों के लिए सौभाग्य की बात है। उन्होंने कहा कि बिना मेहनत के सफलता नहीं मिल सकती। विद्यार्थी नियमित रूप से कॉलेज आएं और अपने सपनों को आकार दें।

विधायक कालूहेड़ा ने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि आपको श्रेष्ठ शिक्षक मिले हैं, हमेशा अपने इन गुरुओं का सम्मान करें क्योंकि गुरु का अपमान करने वाले को जीवन में कभी सफलता नहीं मिलती। यह आपका अपना कॉलेज है और इसकी प्रतिष्ठा को और बढ़ाना आपकी जिम्मेदारी है। भारत की बौद्धिक संपदा का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि देश के वैज्ञानिकों की प्रतिभा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रयासों से ही भारत ने बहुत जल्द कोरोना का टीका बना लिया था। उन्होंने कामना की कि इस महाविद्यालय में भी ऐसी ही वैज्ञानिक और बौद्धिक संपदा विकसित हो। साथ ही बताया कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मार्गदर्शन में उज्जैन नगर का लगातार कायाकल्प हो रहा है। उन्होंने छात्रों के कल्याण के लिए हर संभव सहयोग का आश्वासन दिया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में डॉ. अल्पना उपाध्याय ने अतिथियों का स्वागत किया। प्राचार्य प्रो. कल्पना वीरेंद्र सिंह ने स्वागत भाषण देते हुए उच्च शिक्षा विभाग के निदेर्शों की रूपरेखा रखी। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को महत्वपूर्ण जानकारियां प्रदान की गईं। इनमें परीक्षा प्रणाली के बारे में प्रो. आयशा सिद्दीकी, शिक्षण अधिगम पर प्रो. दिनेश वर्मा, आवास सहायता योजना पर प्रो. चिंतामन सूर्यवंशी, रैगिंग रोकथाम पर प्रो. रायसिंह सोलंकी और भारतीय ज्ञान परंपरा के विषय में डॉ. शोभा मिश्र ने विस्तृत जानकारी दी।

समारोह की शुरूआत में सरस्वती वंदना डॉ. नलिनी तिलकर ने प्रस्तुत की। कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. रीना अधर्व्यू ने किया और अंत में आभार डॉ. बी.एस. अखंड ने माना। इस अवसर पर डॉ. मनसूर खान, डॉ. एल.एस. गोरसिया, डॉ. संतोष शर्मा, डॉ. ममता पंवार, डॉ. संजीव शर्मा, डॉ. राजश्री शर्मा, एनसीसी अधिकारी मेजर डॉ. मोहन निमोले, एनएसएस अधिकारी डॉ. नीरज सारवान, मीडिया प्रभारी डॉ. रफीक नागोरी, क्रीड़ा अधिकारी नवीन कोरट, साथी सेल की प्रभारी डॉ. राजश्री सेठ, डॉ. अंशु भारद्वाज और युवा उत्सव समिति प्रभारी डॉ. हुक्का कटारा सहित महाविद्यालय के प्राध्यापक एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

बाबा साहब से जुड़े पंच तीर्थ का विकास भाजपा का विनम्र प्रयास - आर्य

केंद्रीय मंत्रिमंडल एवं राज्यसभा में भी अनुसूचित जाति वर्ग को सर्वाधिक नेतृत्व भाजपा ने दिया

भाजपा अजा मोर्चा उज्जैन और मंदसौर संभाग की संयुक्त बैठक संपन्न

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आर्य व प्रदेश अध्यक्ष श्री परमार, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री कैरो हुए शामिल

ब्रह्मास्त्र ›› उज्जैन

भारतीय जनता पार्टी अनुसूचित जाति मोर्चा की उज्जैन एवं मंदसौर संभाग की संयुक्त बैठक शनिवार को फ्रीगंज स्थित भाजपा कार्यालय लोकशक्ति भवन में संपन्न हुई। बैठक में मोर्चा के आगामी कार्यक्रमों के लिए विस्तार से कार्ययोजना तैयार की गई।

मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष सत्यनारायण खोईवाल ने विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि बैठक में मुख्य रूप से मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मंत्री लाल सिंह आर्य और प्रदेश अध्यक्ष भगवान सिंह परमार सहित मोर्चा के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री सूरज कैरो प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। बैठक में मोर्चा के वर्तमान कार्यों की समीक्षा के साथ

आगामी कार्यक्रमों के संबंध में रूपरेखा तैयार की गई। इस महत्वपूर्ण बैठक में राज्यसभा सांसद बालयोगी श्री उमेश नाथ जी महाराज, भाजपा जिला अध्यक्ष संजय अग्रवाल, ग्रामीण जिला अध्यक्ष राजेश धाकड़, विधायक अनिल जैन कालूहेड़ा, विधायक सतीश मालवीय, महापौर मुकेश टटवाल, निगम सभापति श्रीमती कलावती यादव, भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. प्रभुलाल जाटवा, भाजपा जिला प्रभारी श्री बजरंग पुरोहित, हाउसिंग बोर्ड अध्यक्ष श्री ओम जैन, पाठ्य पुस्तक निगम अध्यक्ष सोभाग सिंह, मोर्चा प्रदेश महामंत्री गणपत डाबी, मोर्चा प्रदेश महामंत्री एवं उज्जैन संभाग प्रभारी कृष्णा चौधरी, प्रदेश मंत्री कन्हैया लाल चौहान एवं प्रदेश मंत्री जगदीश चौहान, मंदसौर संभाग प्रभारी शैलेष गिरजे सहित उज्जैन और मंदसौर संभाग के अंतर्गत आने वाले मोर्चा के प्रदेश पदाधिकारी, मोर्चा जिलाध्यक्ष, महामंत्री व अन्य अपेक्षित श्रेणी के सभी प्रमुख पदाधिकारी मौजूद रहे।

सर्वप्रथम अतिथियों ने बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर और भारत माता के चित्र पर पुष्प अर्पित कर बैठक का शुभारंभ किया। बैठक को संबोधित करते हुए मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष भगवान सिंह परमार ने मोर्चा से मंडल तक के गठन को शीघ्र पूर्ण करने का आह्वान कर, केंद्र एवं प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ प्रत्येक बस्ती तक पहुंचाने का आह्वान किया।

मोर्चा के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष सूरज कैरो ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि हमारे पितृ पुरुष श्यामा प्रसाद मुखर्जी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के पदचिह्नों पर चलकर मोर्चा के माध्यम से पार्टी को और सशक्त बनाना है।

मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री लाल सिंह आर्य ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर से जुड़े पंच तीर्थ का विकास भाजपा का विनम्र प्रयास है। केंद्रीय मंत्रिमंडल एवं राज्यसभा में भी भारतीय जनता पार्टी ने अनुसूचित जाति वर्ग को सर्वाधिक प्रतिनिधित्व दिया है।

श्री आर्य ने आगे कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के शासनकाल में चलाई जा रही गरीब कल्याण की योजनाओं का सर्वाधिक लाभ अनुसूचित जाति वर्ग को प्रत्यक्ष रूप से मिल रहा है। इसी क्रम में भारतीय जनता पार्टी की राज्य सरकारें भी गरीब कल्याण के कार्यों में सतत जुटी हुई हैं,

समाज सेवा से होता है व्यक्तित्व का विकास, राष्ट्रीय सेवा योजना के अभिमुखीकरण में मंथन

ब्रह्मास्त्र ›› उज्जैन

सम्राट् विक्रमादित्य विश्वविद्यालय परिक्षेत्र के अंतर्गत राष्ट्रीय सेवा योजना का उज्जैन जिला स्तरीय अभिमुखीकरण कार्यक्रम शासकीय माधव विज्ञान महाविद्यालय में आयोजित किया गया। इसमें जिले के विभिन्न महाविद्यालयों के कार्यक्रम अधिकारियों और वरिष्ठ स्वयंसेवकों ने नवीन सत्र की गतिविधियों व कार्ययोजना पर विचार-विमर्श किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व कार्यक्रम समन्वयक व शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ. प्रशांत पुराणिक ने राष्ट्रीय सेवा योजना के उद्देश्यों, स्वयंसेवकों की भूमिका और समाज सेवा के माध्यम से व्यक्तित्व विकास पर मार्गदर्शन दिया। विशिष्ट अतिथि पुरातत्ववेत्ता डॉ. रमन सिंह सोलंकी ने भारतीय सांस्कृतिक विरासत, राष्ट्र निर्माण और युवा शक्ति की सामाजिक जिम्मेदारियों पर विचार रखे। अध्यक्षता करते हुए माधव विज्ञान महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. हरीश व्यास ने राष्ट्रीय सेवा योजना को विद्यार्थियों में अनुशासन, नेतृत्व और सामाजिक उत्तरदायित्व विकसित करने का प्रभावी माध्यम बताया। सम्राट् विक्रमादित्य विश्वविद्यालय के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. शेखर मैदमवार ने नवीन सत्र की कार्ययोजना, शासन के निदेर्शों तथा विभिन्न गतिविधियों के प्रभावी संचालन के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। इस दौरान मेरा युवा भारत से संबद्ध जिला युवा अधिकारी नीतू मीणा भी उपस्थित रहीं।

उज्जैन
रविवार
05
जुलाई, 2026

दैनिक ब्रह्मास्त्र

धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणो धनमश्विना ॥

अर्थः अग्नि, वायु, सूर्य, वसुगण, इन्द्र, बृहस्पति, वरुण तथा अश्विनी कुमार ये सब वैभवस्वरुप हैं।

खबर एक नजर...

निगम का सहायक प्रभारी सिटी फॉरेस्ट निलंबित

इंदौर। इंदौर नगर निगम में काम करने वाले सहायक प्रभारी सिटी फॉरेस्ट मितुल सोनी (मूलपद - स्वच्छता निरीक्षक) को नगर निगम कमिश्नर क्षितिज सिंघल ने निलंबित कर दिया है। सोनी ने अपने पद का दुरुपयोग करते हुए सिटी फॉरेस्ट से निगम अधिपत्य की लकड़ी बेचने में संलिप्तता होने से निगम को वित्तीय क्षति पहुंचाई। निगम कमिश्नर ने सोनी को निलंबित करने के साथ ही विभागीय जांच के भी आदेश दिए है। मितुल सोनी द्वारा सिटी फॉरेस्ट से नगर निगम के अधिपत्य की लकड़ी बेचने संबंधी जानकारी का विडियो सोशल मिडिया पर वायरल हुआ है, जिसमें सहायक प्रभारी सिटी फॉरेस्ट की संलिप्तता होने की जानकारी न्यूज में प्रसारित होना गंभीर कदाचरण की श्रेणी में होकर प्रथम दृष्टया भ्रष्टाचार में संलिप्तता होना दर्शाता तथा सोनी का यह कृत्य निगम हित के प्रतिकुल होकर मध्य प्रदेश सिविल सेवा (आचरण) नियम 1965 के विपरीत होने से सोनी को निलंबित कर जांच करने के आदेश दिए हैं।

इंदौर में सौलेते पिता ने नाबालिग से किया दुष्कर्म

इंदौर। तेजाजी नगर थाना क्षेत्र में सौतेले पिता द्वारा एक नाबालिग के साथ दुष्कर्म का मामला सामने आया है। घटना के बाद पीड़िता ने मामले की जानकारी मां को दी, इसके बाद उन्होंने थाने पर शिकायत की। मामले में पुलिस ने विभिन्न धाराओं में केस दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। एडिशनल डीसीपी अमरेंद्र सिंह ने बताया कि मामला तेजाजी नगर थाना क्षेत्र का है। इलाके में रहने वाली नाबालिग की शिकायत पर सौतेले पिता पर पॉक्सो एक्ट सहित विभिन्न धाराओं में केस दर्ज किया है। उन्होंने बताया कि घटना के वक्त नाबालिग घर में अकेली थी। तभी सौतेले पिता ने इस बात का फायदा उठाया और उसके साथ गलत काम किया। साथ ही उसी धमकी भी दी कि अगर यह बात किसी को बताई तो उसे और उसकी मां को मार देगा। धमकी देकर सौतेला पिता उसका फायदा उठाता रहा। मगर पीड़िता ने अपनी मां को आपबीती बताई तब कई जाकर मामला सामने आया। इधर, घटना का पता चलने के बाद पीड़िता को लेकर परिजन थाने पहुंचे, जहां मामले में उन्होंने आरोपी पिता के खिलाफ पॉक्सो एक्ट सहित विभिन्न धाराओं में केस दर्ज कराया। एडिशनल डीसीपी अमरेंद्र सिंह ने बताया कि मामले में पुलिस ने केस दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है।

यूपीआई के जरिए बैंक खाते से निकाले 65 हजार

इंदौर। गांधी नगर थाना क्षेत्र में साइबर ठगी का मामला सामने आया है। एक व्यक्ति के बैंक खाते से यूपीआई के माध्यम से 65 हजार रुपए से अधिक की राशि निकाल ली गई। बैंक खाते की जानकारी मिलने पर पीड़ित ने पुलिस से शिकायत की, जिसके बाद मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है। गांधी नगर पुलिस के अनुसार बीसी कॉम्प्लेक्स निवासी राकेश कुमार पिता बाबूराम कोरी की शिकायत पर अज्ञात आरोपियों के खिलाफ धोखाधड़ी का प्रकरण दर्ज किया गया है। राकेश कुमार ने पुलिस को बताया कि उनके बैंक खाते में रकम कम दिखाई देने पर उन्हें संदेह हुआ। इसके बाद वह बैंक पहुंचे और खाते का स्टेटमेंट निकलवाया। स्टेटमेंट की जांच में पता चला कि 15 जून को उनके खाते से यूपीआई के माध्यम से 65,504 रुपए निकाल लिए गए। यह राशि 'जामीन' और 'मुजाफा' नाम से हुए यूपीआई ट्रांजेक्शन के जरिए दूसरे खातों में भेजी गई। पीड़ित का कहना है कि वह इन व्यक्तियों को नहीं जानते और न ही उन्होंने इस तरह का कोई ट्रांजेक्शन किया है। शिकायत के आधार पर गांधी नगर पुलिस ने धोखाधड़ी का मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस यूपीआई ट्रांजेक्शन की जानकारी जुटाने के साथ संबंधित बैंक खातों और आरोपियों की पहचान करने में जुटी है।

पैसों के लेन-देन को लेकर मारपीट, जान से मारने की दी धमकी

इंदौर। खजराना थाना क्षेत्र में पैसों के लेन-देन को लेकर एक व्यक्ति के साथ मारपीट और जान से मारने की धमकी देने का मामला सामने आया है। पीड़ित की शिकायत पर पुलिस ने दो आरोपियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। वहीं, तिलक नगर थाना क्षेत्र में एक महिला को धमकाने के मामले में भी पुलिस ने केस दर्ज किया है। खजराना पुलिस के अनुसार जल्ला कॉलोनी निवासी 33 वर्षीय शाहरुख पिता अनवर खान की शिकायत पर इरशाद और शाहरुख उर्फ काला निवासी चंदन नगर के खिलाफ प्रकरण दर्ज किया गया है। पीड़ित ने पुलिस को बताया कि पैसों के लेन-देन को लेकर दोनों आरोपी उसके घर पहुंचे और गाली-गलौज करने लगे। विरोध करने पर दोनों ने उसके साथ मारपीट की। जाते समय आरोपियों ने धमकी दी कि भविष्य में यदि पैसों की बात की तो जान से खत्म कर देंगे। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

सितंबर तक भी धार ट्रेन पहुंचना मुश्किल

इंदौर। इंदौर-दाहोद नई रेल लाइन परियोजना में टीही के आगे बन रही करीब तीन किमी लंबी टनल 7 साल बाद भी अधूरी है। यही वजह है कि ट्रेन का धार तक संचालन शुरू नहीं हो सका। इंदौर से जुड़े किसी भी रेलवे प्रोजेक्ट की यह पहली टनल है, जबकि देश के दूसरे रेलवे प्रोजेक्ट में इससे कहीं लंबी टनल कम समय में बन चुकी हैं।

भारत के मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार का इंदौर एयरपोर्ट पर प्रशासनिक अधिकारियों ने किया स्वागत

लोकतंत्र की मजबूत नींव हैं बीएलओ, एसआईआर में मप्र ने किया उत्कृष्ट कार्य

ब्रह्मास्त्र ›› इंदौर

भारत के मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार शनिवार को इंदौर पहुंचे। एयरपोर्ट पर प्रशासनिक अधिकारियों ने उनका स्वागत किया। इंदौर आगमन पर उन्होंने कहा कि देवी अहिल्याबाई होलकर की पावन नगरी में आना उनके लिए सौभाग्य की बात है। उनका यह दौरा बूथ लेवल ऑफिसर्स (बीएलओ) से संवाद और चुनावी व्यवस्थाओं की समीक्षा के उद्देश्य से है।

मुख्य निर्वाचन आयुक्त ने कहा कि बूथ लेवल ऑफिसर्स चुनाव आयोग की पूरी व्यवस्था के आधार स्तंभ हैं। मतदाता सूची के संधारण से लेकर चुनाव प्रक्रिया को जमीनी स्तर पर सफल बनाने तक बीएलओ की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र को मजबूत बनाने में बीएलओ की प्रतिबद्धता और परिश्रम का महत्वपूर्ण योगदान है।

मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने इंदौर में आयोजित कार्यक्रम में बूथ लेवल अधिकारियों से संवाद करते हुए कहा कि मध्यप्रदेश ने विशेष गहन पुनरीक्षण और मतदाता सूची परिशोधन का कार्य जिस पारदर्शिता, दक्षता और व्यवस्थित तरीके से पूरा किया है, वह देश के लिए एक आदर्श उदाहरण है।

उन्होंने कहा कि भारत की चुनावी प्रक्रिया दुनिया की सबसे पारदर्शी और विश्वसनीय प्रणालियों में शामिल है। मतदाता सूची निर्माण से लेकर मतदान और मतगणना तक हर चरण में राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों की सहभागिता सुनिश्चित की जाती है। यही कारण है कि भारत वर्ष 2026 में विश्व के प्रमुख लोकतांत्रिक देशों के संगठन इंटरनेशनल आइडिया की अध्यक्षता कर रहा है।

मुख्य निर्वाचन आयुक्त ने कहा कि निर्वाचन आयोग का लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी पात्र नागरिक मतदाता सूची से वंचित न रहे और कोई अपात्र व्यक्ति सूची में शामिल न हो। इसके लिए विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान चलाया गया। उन्होंने बताया कि सोशल मीडिया, एफएम रेडियो, समाचार पत्रों और जनजागरूकता अभियानों के माध्यम से व्यापक स्तर पर मतदाता जागरूकता बढ़ाई गई।

ज्ञानेश कुमार ने बीएलओ को लोकतंत्र की रीढ़ बताते हुए कहा कि वे घर-घर जाकर नए मतदाताओं का पंजीयन करते हैं और मृत, स्थानांतरित तथा डुप्लीकेट नामों को सूची से हटाने का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। उन्होंने विशेष रूप से आदिवासी और दूरस्थ क्षेत्रों में कार्यरत बीएलओ की सराहना की।

उन्होंने बताया कि देश में लगभग 95 करोड़ मतदाता हैं और चुनाव प्रक्रिया के संचालन में 1.80 करोड़ से अधिक चुनावकर्मी भाग लेते हैं। इतने विशाल स्तर पर भी भारत की चुनाव व्यवस्था पारदर्शिता और जवाबदेही का उत्कृष्ट उदाहरण है। उन्होंने ईसीआई नेट एप को निर्वाचन प्रक्रिया में पारदर्शिता और सुगमता बढ़ाने वाला महत्वपूर्ण डिजिटल नवाचार बताया।

लोकतंत्र की सफलता में प्रत्येक चुनाव कर्मी की अहम भूमिका

- उन्होंने विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान का उल्लेख करते हुए कहा कि मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के नेतृत्व में संभागायुक्तों, जिला निर्वाचन अधिकारियों, निर्वाचन पंजीकरण अधिकारियों और बीएलओ ने मिलकर उत्कृष्ट कार्य किया है। इस अभियान ने मध्य प्रदेश को देशभर में एक आदर्श के रूप में स्थापित किया है, जिस पर पूरे देश को गर्व है।
- ज्ञानेश कुमार ने प्रदेश के मतदाताओं तथा चुनावी प्रक्रिया से जुड़े अधिकारियों और कर्मचारियों की सराहना करते हुए कहा कि लोकतंत्र की सफलता में प्रत्येक चुनाव कर्मी की अहम भूमिका है। उन्होंने सभी के प्रयासों की प्रशंसा करते हुए अपने संबोधन का समापन ₹जय भारत, जय हिंद₹ के उद्घोष के साथ किया।

कॉफी टेबल बुक का विमोचन, बीएलओ ने साझा किए अनुभव

कार्यक्रम में मध्यप्रदेश में संचालित एसआईआर अभियान की उपलब्धियों और नवाचारों पर आधारित विशेष कॉफी टेबल बुक का विमोचन किया गया। इस दौरान बीएलओ ने मुख्य निर्वाचन आयुक्त से सीधे संवाद कर अपने अनुभव साझा किए। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी संजीव कुमार झा ने बताया कि मध्यप्रदेश में एसआईआर अभियान सफलतापूर्वक पूरा किया गया। उन्होंने कहा कि निर्वाचन आयोग ने बीएलओ के मानदेय को बढ़ाकर 6 हजार रुपये करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने इस उपलब्धि का श्रेय बीएलओ, जिला प्रशासन, राजनीतिक दलों और निर्वाचन टीम के सामूहिक प्रयासों को दिया।

सेल्फ स्टडी के लिए आ रहे 100 छात्रों को भी रोका

भवन जर्जरः सेंट्रल लाइब्रेरी में फर्स्ट ईयर के छात्रों को नो एंट्री

ब्रह्मास्त्र ›› इंदौर

देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी की सेंट्रल लाइब्रेरी में यूटीडी (डीएवीवी के 34 टीचिंग विभागों) के फर्स्ट ईयर के स्टूडेंट्स की एंट्री बंद कर दी गई है। फिलहाल उन्हें लाइब्रेरी की सुविधा नहीं मिल पाएगी। यही नहीं, यहां सेल्फ स्टडी के लिए आने वाले सौ छात्रों को भी रोक दिया गया है।

ऐसा इसलिए किया गया है, क्योंकि सेंट्रल लाइब्रेरी का भवन पूरी तरह जर्जर हो चुका है। एक बड़ा हिस्सा खराब स्थिति में है। हॉल में जहां छात्र बैठकर पढ़ भी रहे हैं, वह हिस्सा भी बहुत अच्छी स्थिति में नहीं है। छात्रों का कहना है कि लाइब्रेरी का फायदा तो मिलना ही चाहिए। वहीं जिन सौ छात्रों को सेल्फ स्टडी के लिए अलग से एक हॉल आवंटित किया गया था, वह भी बंद कर दिया गया है। इसी कारण छात्र परेशान हैं। इधर, पूरे मामले पर यूनिवर्सिटी का कहना है कि सेंट्रल लाइब्रेरी में दो अलग-अलग कक्षों का नवीनीकरण चल रहा है।

यह काम चार माह में पूरा हो जाएगा। उसके बाद छात्रों को मौका मिल जाएगा।

तब तक उन्हें वैकल्पिक जगह स्वयं देखनी होगी। जानकारी के अनुसार एक्सपर्ट्स की एक पैनल ने भी इसका निरीक्षण किया था। उसकी रिपोर्ट में कहा गया कि जिस हिस्से में 100 छात्रों को सेल्फ स्टडी के लिए जगह दी गई थी, वह पूरी तरह जर्जर और खतरनाक है। यह कभी भी गिर सकता है, इसलिए यूनिवर्सिटी ने तत्काल इसे बंद किया।

आईटी सेंटर भी नई बिल्डिंग में ही रहेगा

डीएवीवी का कहना है कि सेंट्रल लाइब्रेरी के लिए नई बिल्डिंग परिसर में ही पिछले हिस्से में बन रही है। इसे तैयार होने में अधिकतम एक साल का वक्त लगेगा। यह भवन तैयार होते ही सेंट्रल लाइब्रेरी वहीं शिफ्ट होगी। संभवतः आईटी सेंटर भी यहीं रहेगा। हालांकि, चौंकाने वाली बात यह है कि पिछले पांच सालों से कार्यपरिषद में बजट बैठक के दौरान इसका प्रस्ताव आया और पास किया गया था, लेकिन काम कुछ माह पहले ही शुरू हो पाया।

वर्तमान लाइब्रेरी की हालत बेहद खराब, अव्यवस्थित भी हो रही

दरअसल, वर्तमान लाइब्रेरी की हालत बहुत खराब है। यह पूरी तरह अव्यवस्थित भी है। सेंट्रल लाइब्रेरी में नए, पुराने स्टूडेंट, पीएचडी स्कॉलर के साथ ही प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे छात्रों के लिए अलग-अलग ब्लॉक होने चाहिए। किताबें भी उसी के मुताबिक रैक में रखी जानी चाहिए, लेकिन अभी बिल्डिंग का 35 फीसदी तक का हिस्सा जर्जर है। कुलपति डॉ. राकेश सिंघई का कहना है कि सेल्फ स्टडी कर रहे सौ से ज्यादा छात्रों से कहा है कि वे कुछ समय इंतजार करें, क्योंकि सुरक्षा ही प्राथमिकता है। उन्होंने कहा, इसी बिल्डिंग के एक मजबूत हिस्से में हम रिसर्च सेंटर बना रहे हैं। वहां दो अलग कक्ष बनाए जा रहे हैं। ऊपरी हिस्से में इन छात्रों को जगह दी जाएगी, लेकिन तीन से चार माह लगेंगे। वहीं फर्स्ट ईयर के छात्रों को भी हम जल्द सुविधा देंगे। नई बिल्डिंग का काम भी तेजी से चल रहा है। कुल मिलाकर छह से आठ माह की परेशानी है।

एटीएम में पैसा जमा करने वाले कर्मचारियों ने निकाले 40लाख

ब्रह्मास्त्र ›› इंदौर

इंदौर में एटीएम में पैसा जमा करने वाली कंपनी के दो कर्मचारियों ने धीरे-धीरे 40 लाख रुपए निकाल लिए। आरोपियों ने यह रकम ऑनलाइन गेमिंग और आईपीएल सट्टे में लगा दी। गबन का खुलासा होने पर मामला थाने पहुंचा। पुलिस ने जांच के बाद दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। हालांकि, उनके पास से 2 लाख रुपए ही बरामद हो सके हैं।

एसीपी पराग सैनी ने बताया कि मामला लसूडिया थाना क्षेत्र का है। एटीएम मशीनों में नकदी जमा करने वाली एक कंपनी के दो कर्मचारी, अभिषेक और दीपक को गिरफ्तार किया गया है। दोनों पिछले छह महीने से कभी एक लाख तो कभी डेढ़ लाख रुपए निकालकर गबन कर रहे थे।

जब कंपनी को पैसों के गबन की जानकारी मिली तो मामला थाने पहुंचा। पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू की। जांच में दोनों की संलिप्तता सामने आने पर शुक्रवार को उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

ऑनलाइन गेमिंग और सट्टे में लगाए पैसे- पुलिस पूछताछ में सामने आया कि दोनों आरोपियों ने गबन की रकम ऑनलाइन गेमिंग और ऑनलाइन आईपीएल सट्टे में लगा दी, जहां वे पूरी रकम हार गए। फिलहाल उनके पास से 2 लाख रुपए ही बरामद हुए हैं। पुलिस उनसे पूछताछ कर रही है। साथ ही यह भी पता लगाया जा रहा है कि उन्होंने किन-किन प्लेटफॉर्म पर पैसा लगाया। मामले की बैक-ट्रैकिंग की जा रही है और आरोपियों के आपराधिक रिकॉर्ड भी खंगाले जा रहे हैं।

स्टेशन के रिडेवलपमेंट में 4 साल का ब्रेक

ब्रह्मास्त्र ›› इंदौर

इंदौर रेलवे स्टेशन का 412 करोड़ का रिडेवलपमेंट प्रोजेक्ट अटकने की कई वजह सामने आई है। हद यह है कि 42 महीने में काम पूरा करने का लक्ष्य था, लेकिन 15 महीने में रेलवे साइट ही क्लियर करके नहीं दे पाया।

ठेकेदार एजेंसी भी इतने समय प्रोजेक्ट की डिजाइन तक फाइनल नहीं कर पाई। नतीजा यह हुआ कि मात्र आठ फीसदी काम हो गया, जबकि तय शेड्यूल के हिसाब से इस अवधि में कम से कम 35 फीसदी काम पूरा हो जाना चाहिए था। अब सिंहस्थ-2028 से पहले पूरा होने वाला प्रोजेक्ट चार साल पीछे चला गया है। रेलवे ने 24 दिसंबर 2024 को अहमदाबाद की मॉन्टेकार्लो लि. को ठेका दिया था। निर्माण अप्रैल 2025 में शुरू हुआ। इसके बाद रेलवे अधिकारियों और एजेंसी के बीच लगातार बैठकें होती रहीं, नोटिस भी जारी हुए, पर काम की रफ्तार नहीं बढ़ी। जनवरी 2026 में एजेंसी ने काम का दायरा बढ़ाने के लिए प्लेटफॉर्म-1 उपलब्ध कराने की मांग की, लेकिन रेलवे साइट खाली नहीं करा सका। डीआरएम अश्वनी कुमार ने कहा, सिंहस्थ तक रिडेवलपमेंट पूरा होना संभव नहीं था क्योंकि विस्तार के लिए पर्याप्त जगह चाहिए। रेलवे ने धीमी प्रगति पर निर्माण एजेंसी को कई बार नोटिस दिए। समीक्षा बैठकों में काम तेज करने के निर्देश भी दिए पर एजेंसी के खिलाफ कोई कठोर कार्रवाई नहीं की गई। मॉन्टेकार्लो लि. आज तक पूरे स्टेशन का डिजाइन वर्क पूरा नहीं कर सकी है। सिर्फ एजेंसी मुख्य रूप से पार्सल कार्यालय हटाने और खुदाई जैसे शुरूआती कार्य ही कर पाई है।

महापौर ने जलभराव प्रभावित क्षेत्रों का किया निरीक्षण

ब्रह्मास्त्र ›› इंदौर

इंदौर में बारिश के कारण शहर में जलभराव और अन्य परेशानियों से बचाव के लिए नगर निगम द्वारा की जा रही तैयारियों को देखने महापौर पुष्यमित्र भार्गव शनिवार को खुद मैदान में उतरे। उन्होंने कई इलाकों में ग्राउंड की स्थिति दिखी। इस दौरान उन्होंने विशेष रूप से भमोरी इलाके का चेक किया और पूर्व में दिए गए निदेर्शों के पालन का रिव्यू किया।

इस दौरान महापौर ने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि जिन जगहों पर हर साल बारिश के दौरान जलभराव की समस्या आती है। वहां पहले से प्रभावी व्यवस्था सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि सभी अपर आयुक्त, जोनल अधिकारी और निगम अमले को पहले ही संवेदनशील इलाकों की पहचान कर जरूरी काम समय पर पूरा करने के निर्देश दिए गए थे। भमोरी इलाके के रहवासियों ने महापौर को बताया कि पहले तेज बारिश के बाद दो से ढ़ाई घंटे तक पानी भरा रहता था, लेकिन इस बार निगम द्वारा किए गए कामों के कारण पानी तेजी से निकला और स्थिति में सुधार देखने को मिला। महापौर ने अधिकारियों से कहा कि जहां अभी भी कुछ काम बचे हैं, उन्हें प्राथमिकता के आधार पर जल्द से जल्द पूरा किया जाए। निरीक्षण के दौरान ट्रांसपोर्ट नगर क्षेत्र में मौजूद अवरोधों को हटाने के निर्देश भी दिए गए, ताकि जल निकासी बाधित न हो और आम लोगों को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। महापौर ने कहा कि नगर निगम का पूरा अमला लगातार मैदान में रहकर काम कर रहा है।

औद्योगिक क्षेत्र की मुख्य सड़क 6 महीने से बदहाल, मिट्टी-गिट्टी डालकर कर रहे अस्थायी मरम्मत

पीथमपुर लिंक मार्ग पर गड्ढों के कारण ऑटो पलटा, हादसे में ड्राइवर घायल

ब्रह्मास्त्र ›› इंदौर

पीथमपुर लिंक मार्ग पर बने गहरे गड्ढों की वजह से शनिवार सुबह एक ऑटो बेकाबू होकर पलट गया। इस हादसे में ऑटो चालक घायल हो गया। आगरा-मुंबई राष्ट्रीय राजमार्ग (एबी रोड) को महू-नीमच मार्ग से जोड़ने वाला यह मुख्य लिंक मार्ग पिछले छह महीनों से जर्जर हालत में है, जिससे यहां आए दिन दुर्घटनाएं हो रही हैं।

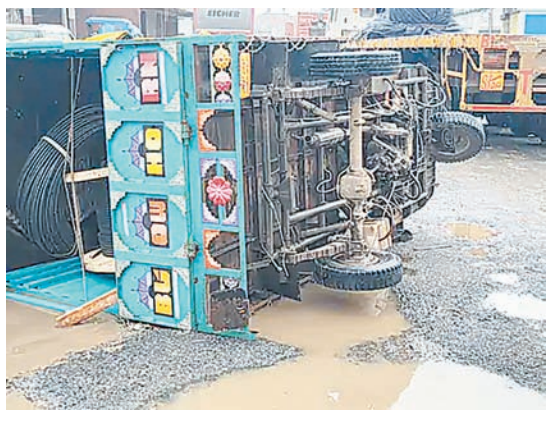

स्थानीय लोगों ने बताया कि सड़क की बदहाली की शिकायतें सामने आने पर जिम्मेदार विभाग के अधिकारी गड्ढों में मिट्टी और गिट्टी डलवाकर खानापूर्ति कर देते हैं। औद्योगिक क्षेत्र होने के कारण इस मार्ग पर भारी वाहनों का

लगातार आना-जाना लगा रहता है, जिससे यह अस्थायी मरम्मत कुछ ही घंटों में उखड़ जाती है और सड़क वापस जर्जर हो जाती है। मुंबई से पहली बार पीथमपुर पहुंचे ट्रक ड्राइवर अल्ताफ ने बताया कि औद्योगिक हब के मुख्य रास्ते पर दो-दो फीट गहरे गड्ढे बने हुए हैं। इन गड्ढों के कारण बड़े और भारी ट्रकों के भी संतुलन खोने का खतरा हमेशा बना रहता है।

शिकायतों के बाद भी अधिकारियों ने नहीं लिया एक्शन

स्थानीय दुकानदार दिलीप ने बताया कि इस लिंक मार्ग की दयनीय स्थिति को लेकर संबंधित विभाग को कई बार लिखित और मौखिक रूप से जानकारी दी जा चुकी है, लेकिन अधिकारियों ने अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया है। सड़क खराब होने से रोज दोपहिया वाहन चालक और राहगीर गिरकर चोटिल हो रहे हैं।

रील्स देखकर व्यापारी के बेटे को समझा करोड़पति, किया किडनैप

ब्रह्मास्त्र ▸▸ पन्ना

सोशल मीडिया पर महंगे मोबाइल और लग्जरी लाइफ की रील्स देखकर बदमाशों ने पन्ना के एक कपड़ा व्यापारी के 19 वर्षीय बेटे को करोड़पति समझ लिया। उसका अपहरण कर 10 लाख रुपए की फिरौती मांगी। हालांकि पुलिस ने युवक को कुछ ही घंटों में सकुशल छुड़ा लिया। अब तीनों आरोपी गिरफ्तार हो गए हैं। पूछताछ में उन्होंने कहा- हमें लगा था बहुत पैसा मिलेगा, लेकिन धोखा हो गया।

पन्ना में 27 जून को पवई के कपड़ा व्यापारी राजेश डेंगरे के 19 वर्षीय बेटे अंशुल उर्फ कान्हा डेंगरे का अपहरण कर लिया गया था। कुछ देर बाद परिवार के पास कॉल आया और 10 लाख रुपए की फिरौती मांगी गई।

परिजनों ने घबराकर पवई थाने में सूचना दी। एसपी निवेदिता नायडू के निर्देश पर पुलिस ने विशेष टीम बनाई और तकनीकी निगरानी के जरिए युवक को सुरक्षित बरामद कर लिया। हालांकि उस समय आरोपी भाग निकले थे। पुलिस के मुताबिक, वारदात का मुख्य आरोपी राजकमल रजक अंशुल का स्कूल का दोस्त था। दोनों साथ पढ़ चुके थे और एक-दूसरे को अच्छी तरह जानते थे। इसी पहचान का फायदा उठाकर आरोपी ने पूरी साजिश रची।

जांच में सामने आया कि घटना से करीब 10 दिन पहले अंशुल ने सोशल मीडिया पर अपना आईफोन बेचने का स्टेटस लगाया था। इसके बाद राजकमल ने साथियों के साथ मिलकर उसे लूटने और फिरौती वसूलने की योजना बनाई। उसने आईफोन खरीदने का बहाना बनाकर अंशुल को बुलाया और बाइक पर बैठाकर जंगल ले गया। पुलिस के अनुसार, आरोपी घटना से करीब एक सप्ताह पहले से अंशुल के सोशल मीडिया अकाउंट पर नजर रख रहे थे। उसकी गतिविधियों और लाइफस्टाइल की जानकारी जुटाने के बाद उन्होंने वारदात को अंजाम दिया।

आरोपी बोले- कर्ज उतारने के लिए रची साजिश

गिरफ्तार आरोपियों राजकमल रजक (19), राजकुमार पाल (25) और शिवेंद्र सिंह (18) ने पूछताछ में बताया कि कान्हा सोशल मीडिया पर अक्सर महंगे मोबाइल और समृद्ध जीवनशैली की रील्स व फोटो पोस्ट करता था। उसे बहुत अमीर समझकर उन्होंने कर्ज उतारने और जल्दी पैसा कमाने के लिए अपहरण की साजिश रची थी।

ईपीएफ के 64 साल पुराने नियम बदलने का विरोध

कर्मचारी संगठन बोले- 8 करोड़ कामगारों, कर्मचारियों, वर्कर्स को भारी नुकसान होगा

ब्रह्मास्त्र ▸▸ भोपाल

कर्मचारी भविष्य निधि के 64 साल पुराने नियमों में किए गए बदलाव मिल मालिकों और उद्योगपतियों के लिए फायदेमंद हैं। यह कर्मचारी की सेवानिवृत्ति में मिलने वाले फंड में भारी कटौती करने वाला है। इसलिए इसका विरोध देश भर में करने की तैयारी है और इसके लिए कर्मचारी संगठन एकजुट होने लगे हैं। केंद्र सरकार की कर्मचारी भविष्य निधि योजना 2026 के नए नियमों को देश भर के 7.31 करोड़ कर्मचारियों, वर्कर्स के पेट पर लात मारने वाला बताया जा रहा है जिसका सीधा असर 30 करोड़ लोगों पर पड़ेगा। देश में इसके पहले 1952 में बना नियम लागू है।

कर्मचारी संगठनों का कहना है कि कर्मचारी भविष्य निधि योजना 2026 में यह प्रावधान बताया है कि इससे कर्मचारियों को अपना अंशदान 12 प्रतिशत से कम देना होगा और उसके हाथ में ज्यादा तनख्वाह आएगी। यह केवल एक पक्षीय है। इससे 8 करोड़ कामगारों कर्मचारियों, वर्कर्स को भारी नुकसान होगा।

संगठनों का कहना है कि यह बदलाव केंद्र सरकार ने पूंजीपतियों और उद्योगपतियों को लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से किया गया है।

नए नियम में यह दिखाया जा रहा है कि इससे कर्मचारियों को फायदा है। ज्यादा सैलरी नकद में आएगी, बल्कि हकीकत यह है कि वर्तमान व्यवस्था में जितना वेतन होता था, उसका 12 प्रतिशत अंशदान कर्मचारी का कटता था तथा 12 प्रतिशत अंशदान नियोक्ता मिलाता था। साथ ही 1.61 प्रतिशत स्थापना और बीमा के रूप में कटते थे। इससे यह होता था कि यदि किसी कल कारखाने, निगम मंडल, बोर्ड, विश्वविद्यालयों, अर्द्धशासकीय संस्थानों, लिमिटेड कंपनी, भेल, भिलाई में कार्य करने वाले किसी कर्मचारी, अधिकारी के हितों की रक्षा हो रही थी। कर्मचारी नेता परसाई कहते हैं कि पुरानी योजना ईपीएफ योजना 1952 के अंतर्गत अभी एक लाख रुपए सैलरी पाने वाले कर्मचारी का खुद और नियोक्ता का अंशदान मिलाकर प्रति माह 24000 रुपए होता है। इस तरह वार्षिक राशि 2 लाख 88 हजार रुपए खाते में जमा हो रही थी। इस तरह पुरानी योजना में 2 लाख 88 हजार और नई योजना में 43200 जमा होंगे। इस प्रकार कर्मचारी को 2 लाख 63 हजार रुपए का नुकसान होगा।

नए नियम नियोक्ता को लाभ पहुंचाने वाले

मध्य प्रदेश संविदा कर्मचारी अधिकारी महासंघ के प्रदेश अध्यक्ष रमेश राठौर का कहना है कि इस नियम से सबसे बड़ा फायदा नियोक्ता (मालिक) को होने जा रहा है। अब वह 15 हजार रुपये के वेतन पर ही 1800 रुपये प्रतिमाह का अंशदान करेगा। अभी उसको 12 हजार रुपए प्रतिमाह करना पड़ता था। उसको सीधे 10200 रुपए की प्रतिमाह की बचत होगी और कर्मचारी को नियोक्ता की और से मिलने वाला अंशदान घट जाएगा। इसके बाद कर्मचारी को सेवानिवृत्ति के समय मिलने वाला फंड बहुत कम मिलेगा।

बिजनेसमैन की पत्नी बाथरूम में फंदे पर लटकी मिली

ब्रह्मास्त्र ▸▸ बैतूल

बैतूल जिले के आमला में कपड़ा कारोबारी प्रशांत यादव की 37 वर्षीय पत्नी रंजिता यादव शनिवार को घर के बाथरूम में फंदे पर लटकी मिलीं। परिजन ने दरवाजा तोड़कर उसे उतारा और अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। रंजिता ने करीब दो महीने पहले ही दूसरी बेटी को जन्म दिया था। उनकी 10 साल की एक बड़ी बेटी भी है। घटना के बाद मामला उस समय तूल पकड़ गया, जब मृतका की बड़ी बहन विजेता यादव ने सास, ससुर और देवरानी पर लंबे समय से मानसिक प्रताड़ना के आरोप लगाए। उनका दावा है कि छोटी बहू के घर आने के बाद रंजिता के साथ भेदभाव बढ़ गया था और उसे नौकरानी की तरह रखा जाता था। वहीं, ससुर सुरेंद्र यादव ने सभी आरोपों को खारिज करते हुए कहा कि रंजिता पिछले करीब 10 साल से डिप्रेशन का इलाज करा रही थीं और परिवार ने कभी उन्हें प्रताड़ित नहीं किया। रंजिता यादव की शादी करीब 10 साल पहले प्रशांत यादव से हुई थी। प्रशांत आमला में कपड़े का कारोबार करते हैं। रंजिता गृहिणी थीं। उनके परिवार में 10 साल की एक बेटी और दो महीने की नवजात बेटी है।मृतका के पिता इंदौर में ठेकेदार थे, जिनका निधन हो चुका है। उनकी मां बीमार हैं, जबकि बड़ी बहन विजेता यादव कॉलेज में प्रोफेसर हैं। मृतका के ससुर सुरेंद्र यादव रेलवे से सेवानिवृत्त लोको पायलट हैं।

खबर एक नजर...

मामा के साथ मंगेतर का फोटो देखकर भड़के लड़के वाले, हथियार लेकर पहुंचे

मनासा। मनासा में 10-12 वर्ष पहले तय हुई बाल सगाई को लेकर दुगार्पुरा गांव के लोग हथियारों के साथ युवती के गांव मांगरोल पहुंच गए। हालांकि दोनों पक्षों के वरिष्ठजनों और समाज के पंचों की समझाइश से मामला शांत हो गया। घटना के दौरान कई युवाओं ने सोशल मीडिया पर वीडियो पोस्ट किए, जिनमें वे पिस्टल लहराते तथा लाठी-हॉकी लेकर जाते दिखाई दे रहे हैं। जानकारी के अनुसार मनासा के दुगार्पुरा निवासी बाबूलाल बंजारा के बेटे दयानंद की सगाई 10-12 साल पहले मांगरोल की एक लड़की से हुई थी। कुछ दिन पहले युवती का उसके अंकल के साथ खिंचवाया एक फोटो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया।

इसे लेकर लड़के पक्ष में गलतफहमी पैदा हो गई और समाज की बार प्रणाली के तहत गांव के लोग विरोध दर्ज कराने और लाखों रुपए के जुमार्ने की मांग के साथ मांगरोल पहुंच गए। लड़की के पिता ने बताया कि 4 माह पहले गणगौर पर्व पर परिवार के लोगों ने सामान्य रूप से फोटो खींचे थे। यही फोटो लड़के पक्ष तक पहुंच गया और उन्होंने गलतफहमी में हथियार लेकर गांव की ओर रुख कर लिया। मनासा थाना प्रभारी निलेश अवस्थी ने बताया कि वायरल वीडियो के आधार पर 10 लोगों को थाने बुलाया। दो पिस्टल जब्त कीं, जो जांच में एयरगन निकलीं। 8 से 10 लोगों के खिलाफ बांडओवर की कार्रवाई की जा रही है।

छिंदवाड़ा में देशभक्ति गीतों के बीच साइबर जागरूकता का संदेश

छिंदवाड़ा। छिंदवाड़ा में पुलिस विभाग ने शनिवार को ह्लएक शाम साहस और समर्पण के नामह्व कार्यक्रम का आयोजन किया। देर रात तक चले इस कार्यक्रम में इंडियन आइडल फेम गायक अनिल श्रीवास्तव ने अपने गीतों से समा बांध दिया। किशोर कुमार के लोकप्रिय गीतों के साथ देशभक्ति गीतों की प्रस्तुति पर मौजूद लोग झूम उठे। कार्यक्रम में ऑपरेशन सिंदूर का विशेष प्रदर्शन भी किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में जबलपुर रेंज के क्कह्र प्रमोद वर्मा शामिल हुए। इस दौरान समाज के लिए उत्कृष्ट कार्य करने वाली सामाजिक संस्थाओं को सम्मानित किया गया। वहीं राहवीर योजना के तहत सड़क हादसों में घायलों को समय पर अस्पताल पहुंचाने वाले लोगों का भी सम्मान किया गया। कार्यक्रम में छिंदवाड़ा कलेक्टर हरेंद्र नारायण, उक्कह्र राकेश सिंह, रढ अजय पांडेय, अरढ आशीष खरे, उक्कह्र साहिल गर्ग, स्वरूप दीक्षित, जेल अधीक्षक प्रतीक जैन सहित जिले के सभी थाना प्रभारी और बड़ी संख्या में सामाजिक गणमान्य नागरिक मौजूद रहे।

1000 किलोमीटर दूर से बेटी की अस्थियां लेकर आई मां

जबलपुर। गुजरात के वलसाड में ट्रेन से कटकर हुई बेटी की संदिग्ध मौत के बाद उसकी बुजुर्ग मां शनिवार को करीब एक हजार किलोमीटर का सफर तय कर अस्थियां लेकर जबलपुर पहुंची। मां ने पुलिस अधीक्षक कार्यालय में शिकायत देकर आरोप लगाया कि उसकी बेटी की मौत हादसा नहीं, बल्कि हत्या है। उसने दामाद पर बेटी को ट्रेन के सामने धक्का देने, अस्थियां छीनने की कोशिश करने और दोनों बच्चों को जान से मारने की धमकी देने के आरोप लगाए। जबलपुर पुलिस ने मामले की गंभीरता को देखते हुए गुजरात पुलिस से संपर्क कर जांच में सहयोग का भरोसा दिया है। जबलपुर जिले के ग्राम पौड़ा निवासी पिंकी नामदेव की मुलाकात कटनी जिले के बहोरीबंद निवासी महेंद्र नामदेव से हुई थी। दोनों एक ही समाज से थे और परिवार की सहमति से वर्ष 2014 में उनका विवाह हुआ। शादी के बाद दोनों सिलाई का काम करते थे। वर्ष 2018 में बेहतर रोजगार की तलाश में दोनों गुजरात के वलसाड चले गए, जहां एक कंपनी में नौकरी करने लगे। कुछ समय तक सब कुछ सामान्य रहा, लेकिन बाद में महेंद्र शराब का आदी हो गया। शराब की लत बढ़ने के साथ वह पत्नी और बच्चों के साथ मारपीट करने लगा। परिवार में बेटा कान्हा (10 वर्ष) और बेटी अवनि (8 वर्ष) हैं।

115 टन मादक पदार्थ नष्ट, कीमत 200 करोड़ से अधिक

ब्रह्मास्त्र ▸▸ मंदसौर

मालवा बेल्ट के नीमच, मंदसौर और रतलाम जिलों में बरामद मादक पदार्थों का नष्टीकरण शनिवार को किया गया। जब्त मादक पदार्थों को न्यायालयीन प्रक्रिया पूरी होने तक सुरक्षित रखा जाता है और समय-समय पर निर्धारित प्रक्रिया के तहत उनका नष्टीकरण किया जाता है।

तीनों जिलों के 1040 प्रकरणों में जब्त करीब 115 टन मादक पदार्थ नष्ट किए गए, जिनकी अनुमानित कीमत 200 करोड़ रुपए से अधिक बताई गई है। इनमें एमडी, डोडाचूरा, अफीम, चरस, गांजा, ब्राउन शुगर सहित अन्य मादक पदार्थ शामिल रहे।

नीमच जिले के नयागांव के नजदीक स्थित सीमेंट फैक्ट्री में शुक्रवार से शनिवार देर शाम तक बड़े स्तर पर मादक पदार्थ नष्टीकरण अभियान चलाया गया। रतलाम रेंज के अंतर्गत आने वाले मंदसौर, नीमच और रतलाम जिलों की पुलिस द्वारा अलग-अलग मामलों में जब्त किए गए नशीले पदार्थों को फैक्ट्री के बॉयलर में जलाकर नष्ट किया गया। रतलाम जिले के 21 पुलिस थानों, मंदसौर जिले के 16 थानों और नीमच जिले के करीब 10 थानों से जब्त मादक पदार्थ इस अभियान में नष्ट किए गए। पूरे अभियान के दौरान रतलाम रेंज के डीआईजी निमिष अग्रवाल, मंदसौर एवं नीमच के एसपी सहित वरिष्ठ पुलिस अधिकारी मौजूद रहे। वहीं सुरक्षा व्यवस्था के लिए भारी पुलिस बल तैनात किया गया था।

डीआईजी निमिष अग्रवाल ने बताया कि केंद्रीय गृह मंत्रालय के निदेर्शानुसार रतलाम रेंज के तीनों जिलों में जब्त मादक पदार्थों का नष्टीकरण किया गया है। इसके लिए विशेष समिति गठित की जाती है, जिसकी निगरानी में पूरी प्रक्रिया संपन्न होती है।

मध्यप्रदेश में 2005 से 2009 के बीच भर्ती शिक्षकों के लिए फिर सुप्रीम कोर्ट जाएगा स्कूल शिक्षा विभाग

70 हजार टीचर्स को टीईटी से बचाने की कोशिश

ब्रह्मास्त्र ▸▸ भोपाल

एमपी के करीब 70 हजार टीचरों को शिक्षक पात्रता परीक्षा से राहत दिलाने स्कूल शिक्षा विभाग सुप्रीम कोर्ट में याचिका लगाएगा। विभाग का तर्क है कि साल 2005 से 2009 के बीच भर्ती हुए शिक्षकों ने पहले ही सरकारी चयन परीक्षा पास कर नौकरी हासिल की थी, इसलिए उन्हें दोबारा पात्रता परीक्षा देने के लिए बाध्य नहीं किया जाना चाहिए। यदि सुप्रीम कोर्ट यह दलील स्वीकार करता है, तो हजारों शिक्षकों को राहत मिल सकती है।

दरअसल, सुप्रीम कोर्ट के सितंबर 2025 के आदेश के बाद लोक शिक्षण संचालनालय ने अप्रैल में निर्देश जारी कर प्रदेश के स्कूल शिक्षा और जनजातीय कार्य विभाग के उन सभी शिक्षकों के लिए जुलाई-अगस्त में शिक्षक पात्रता परीक्षा (टीईटी) आयोजित कराने को कहा है, जिनकी नियुक्ति साल 1998 से 2009 के बीच, यानी शिक्षा का अधिकार (आरटीई) कानून लागू होने से पहले हुई थी।

इस आदेश से प्रदेश के करीब डेढ़ लाख शिक्षक प्रभावित होंगे। सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया है कि जिन शिक्षकों की सेवा अवधि पांच साल से कम है, उन्हें परीक्षा से छूट मिलेगी। वहीं, पांच साल से अधिक सेवा पूरी कर चुके शिक्षकों के लिए टीईटी पास करना जरूरी होगा। परीक्षा पास नहीं करने वाले टीचरों को अनिवार्य सेवानिवृत्ति का सामना करना पड़ेगा। कोर्ट ने ळएळ पास करने की समयसीमा पहले 31 अगस्त 2027 तय की थी। जिसे बढ़ाकर 31 अगस्त 2028 कर दी गई है।

स्कूल शिक्षा विभाग साल 2005 से 2009 के बीच भर्ती हुए करीब 70 हजार शिक्षकों को पात्रता परीक्षा से राहत दिलाने के लिए नया कानूनी प्रयास कर रहा है। इन शिक्षकों की नियुक्ति सरकार द्वारा आयोजित भर्ती परीक्षा के आधार पर हुई थी। हालांकि, यह परीक्षा शिक्षक पात्रता परीक्षा (टीईटी) नहीं थी और न ही इसे नेशनल काउंसिल फॉर टीचर एजुकेशन (एनसीटीई) के निर्धारित मानकों के अनुरूप आयोजित किया गया था।

सूत्रों के मुताबिक, विधि विभाग और सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ताओं से राय लेने के बाद राज्य सरकार एक सप्ताह के भीतर सुप्रीम कोर्ट में नई याचिका दायर कर सकती है। याचिका में अदालत से अनुरोध किया जाएगा कि साल 2005 से 2009 के बीच भर्ती शिक्षकों ने पहले ही सरकारी चयन परीक्षा पास कर नियुक्ति प्राप्त की है, इसलिए उन्हें दोबारा पात्रता परीक्षा देने से छूट दी जाए। विभागीय अधिकारियों का मानना है कि इस याचिका में राहत मिलने की संभावना सीमित है, लेकिन शिक्षकों के हित को देखते हुए यह कानूनी पहल की जा रही है।

शिवपुरी को मिलेगी 2500 करोड़ की डिफेंस फैक्ट्री

मुख्यमंत्री मोहन यादव, केंद्रीय मंत्री सिंधिया करेंगे भूमिपूजन, अदाणी समूह के डायरेक्टर करण और जीत रहेंगे मौजूद

गोला-बारूद, ड्रोन जैसे उपकरण बनाती है कंपनी

ब्रह्मास्त्र ▸▸ भोपाल

मध्य प्रदेश के शिवपुरी जिले में आज रविवार को अदाणी समूह की 2500 करोड़ रुपए की डिफेंस फैक्ट्री का भूमि पूजन किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव पाली गांव के पास नेशनल हाईवे-27 पर इस फैक्ट्री की आधारशिला रखेंगे। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, अदाणी समूह के निदेशक करण अदाणी और जीत अदाणी, प्रदेश के ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर सहित जनप्रतिनिधि और प्रशासनिक अधिकारी मौजूद रहेंगे। यह डिफेंस फैक्ट्री कोलारस क्षेत्र में एनएच-27 के किनारे प्रस्तावित है। यह हाईवे पश्चिम में गुजरात के पोरबंदर तक जाता है और उत्तर भारत से भी बेहतर संपर्क प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, यह क्षेत्र राजस्थान की सीमा से भी सड़क मार्ग से कम समय में जुड़ जाता है। फैक्ट्री स्थल के पास रेलवे लाइन की उपलब्धता इसे औद्योगिक और लॉजिस्टिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बनाती है। सड़क और रेल दोनों माध्यमों से कनेक्टिविटी भविष्य में रक्षा उत्पादों और औद्योगिक सामग्री के परिवहन को आसान बनाएगी।

करीब 2500 करोड़ रुपए के इस निवेश से जिले में औद्योगिक गतिविधियों को नई गति मिलने की उम्मीद है। प्रशासन के अनुसार, इस परियोजना से हजारों लोगों के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर पैदा होंगे। स्थानीय व्यापार, परिवहन, निर्माण कार्य, होटल, रेस्टोरेंट और अन्य छोटे व्यवसायों को भी इसका लाभ मिलने की संभावना है। अडाणी डिफेंस एंड एयरोस्पेस पहले से रक्षा क्षेत्र में सक्रिय है। कंपनी छोटे हथियार, गोला-बारूद, ड्रोन, काउंटर-ड्रोन सिस्टम, सुरक्षा उपकरण और आधुनिक रक्षा तकनीक से जुड़े उत्पाद बनाती है। माना जा रहा है कि शिवपुरी की यूनिट भी देश की रक्षा उत्पादन क्षमता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

पाली गांव के पास बनने वाली यह यूनिट शिवपुरी का अब तक का सबसे बड़ा औद्योगिक निवेश मानी जा रही है। हालांकि कंपनी ने अभी यह सार्वजनिक नहीं किया है कि यहां कौन-कौन से रक्षा उत्पाद बनाए जाएंगे। सुरक्षा कारणों से ऐसी जानकारी पहले साझा नहीं की जाती।

गुना में 15 साल की नाबालिग की कराई डिलीवरी

ब्रह्मास्त्र ▸▸ गुना

गुना जिला अस्पताल गुना में में शनिवार को इलाज के लिए आई एक 15 वर्षीय नाबालिग की उलझी गुत्थी को पुलिस ने अपनी सूझबूझ से सुलझा लिया। दरअसल, राघौगढ़ और ब्यावरा (राजगढ़) के पीपलखेड़ी नाम के दो गांवों के कारण अधिकार क्षेत्र को लेकर जरूर गफलत पैदा हुई। पुलिस ने लड़की के फिर से बयान दर्ज किए। बाद में साफ हुआ कि वह चांचौड़ा इलाके की है।

जानकारी के अनुसार, शनिवार को एक 15 वर्षीय नाबालिग की अचानक तबीयत बिगड़ने पर उसके परिजन उसे उपचार के लिए जिला अस्पताल गुना लेकर पहुंचे थे। परिजन केवल बीमारी के इलाज की बात सोचकर आए थे, लेकिन यहां डॉक्टरों द्वारा जांच किए जाने पर पता चला कि नाबालिग गर्भवती है।

अस्पताल में डॉक्टरों द्वारा तत्काल उसकी प्रसूति कराई गई, जहां उसने एक मृत नवजात को जन्म दिया। फिलहाल पीड़िता जिला अस्पताल के प्रसूति गृह में भर्ती है और उसका इलाज जारी है। अस्पताल चौकी से जैसे ही इस संवेदनशील मामले की सूचना पुलिस को मिली, वैसे ही राघौगढ़ पुलिस ने अस्पताल में पीड़ित के बयान दर्ज करने पहुंचे। शुरूआती जांच में पीड़िता का गांव पीपलखेड़ी सामने आने से असमंजस की स्थिति बन गई, क्योंकि एक पीपलखेड़ी गुना जिले के राघौगढ़ थाना क्षेत्र में भी आता है। हालांकि, जब बारीकी से पूछताछ की गई तो साफ हुआ कि घटना पड़ोसी जिले राजगढ़ के ब्यावरा थाना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले पीपलखेड़ी गांव की है। पीड़िता ने अपने बयानों में बताया कि उसके साथ गलत काम करने वाला मुख्य आरोपी ब्यावरा बस स्टैंड के पास का रहने वाला है। घटना स्थल पड़ोसी जिले का होने के बावजूद, मामले की गंभीरता और पीड़िता की सुरक्षा को देखते हुए राघोगढ़ थाना पुलिस ने उसके बयान दर्ज किए। बाद में यह बात सामने आई कि नाबालिग चांचौड़ा क्षेत्र के रहने वाली है। हालांकि, नाबालिग के परिजन लगातार गुमराह कर रहे हैं। वो यह साफ नहीं बता रहे कि वो किस इलाके के रहने वाले हैं।

भोपाल की कोचिंग क्लॉसेस में फायर सेफ्टी नहीं

भोपाल। लखनऊ में कोचिंग इंस्टीट्यूट में हुए अग्निकांड के बाद भोपाल में 8 कोचिंग इंस्टीट्यूट सील कर दिए गए हैं। कोचिंग संचालकों का कहना है कि यदि उनके भवन में आग से बचाव के लिए किसी बदलाव की जरूरत है तो वे करने के लिए तैयार हैं, लेकिन इसके लिए उन्हें समय चाहिए। बिल्डिंग परमिशन व भूमि विकास नियमों के अनुसार उसे कैसे किया जा सकता है, इस पर भी उन्हें संबंधित अफसर मार्गदर्शन करें। कोचिंग संचालकों के सवालों पर जब नगर निगम के डिप्टी कमिश्नर भुवन गुप्ता से बात की तो उन्होंने स्पष्ट किया कि कार्रवाई का उद्देश्य कोचिंग संस्थानों को लंबे समय तक बंद रखना नहीं, बल्कि उन्हें जरूरी अग्नि सुरक्षा मानकों के अनुरूप संचालित कराना है। उन्होंने कोचिंग संचालकों को फायर प्लान प्रस्तुत करने, तकनीकी मार्गदर्शन लेने और जरूरत पड़ने पर बैठक के जरिए समाधान निकालने का प्रस्ताव दिया। उन्होंने कहा कि कोचिंग संचालक फायर प्लान दें और समय बता दें तो हम सील किए संस्थानों के ताले खोल देंगे। गुप्ता ने कहा कि निरीक्षण में कई संस्थानों में फायर एक्सटिंग्विशर की वैधता समाप्त हो चुकी थी और सात दिन बाद भी उन्हें रिफिल तक नहीं कराया गया। कई संचालकों के पास स्पष्ट फायर प्लान भी नहीं था। निगम का कहना है कि कोचिंग संचालकों से यह भरोसा चाहिए कि वे सुधार की दिशा में गंभीरता से काम कर रहे हैं।

आज गौरी से शादी करेंगे आमिर खान

मशहूर कहावत है कि ह्यदूसरा मौका सिर्फ कहानियां देती हैं, जिंदगी नहींह्ल, लेकिन बॉलीवुड के मिस्टर परफेक्शनिस्ट आमिर खान ने ये कहावत गलत साबित कर दी। दो नाकाम शादियों के बाद आमिर ने जिंदगी को नया मौका दिया है और आज वो 61 की उम्र में गर्लफ्रेंड गौरी स्प्रैट से शादी कर रहे हैं। दोनों आमिर के घर में रजिस्टर्ड मैरिज करेंगे, जिसमें परिवार के लोगों के अलावा चुनिंदा करीबी दोस्त शामिल होंगे। आमिर की पूर्व पत्नियां रीना दत्ता और किरण भी इस शादी में पहुंच सकती हैं।

आमिर की पिछली दो शादियां भले ही नाकाम रहीं, लेकिन वो आज भी दोनों को जिंदगी के अहम किरदार मानते हैं। आमिर महज 20 साल के थे, जब उन्हें पड़ोस में रहने वालीं रीना से प्यार हो गया। तब वो फिल्मों में नहीं आए थे। घरवालों से चोरी-छिपे मुलाकात होना और घरवालों का गुस्सा, आमिर के खाते में आया। उन्होंने हार नहीं मानी और फिल्मी हीरो की तरह दुनिया की नजरों से छिपकर कोर्ट में शादी कर ली, जिसमें 10 रुपए खर्चा आया। दोनों कानूनी तौर पर पति-पत्नी बने, लेकिन दुनिया की नजरों में अपनी-अपनी जिंदगी जीते थे। संघर्ष लंबा रहा, लेकिन फिर दुनिया उनके प्यार के आगे झुकी और उनके रिश्ते को स्वीकार कर लिया। दोनों के 2 बच्चे आयरा और जुनैद हुए। शादी के 15 साल बाद ये रिश्ता टूट गया।

आमिर के लिए ये असहनीय था। उन्होंने शराब का सहारा लिया और खुद को दुनिया से छिपा लिया, लेकिन कभी पहली पत्नी रीना और परिवार पर आंच नहीं आने दी। कुछ समय बाद आमिर की जिंदगी में एक रोज किरण राव की एंट्री हुई, जो उन्हीं की फिल्म की असिस्टेंट डायरेक्टर थीं। न कोई प्यार-मोहब्बत की बातें हुईं, न इजहार, न फैंसी डेट और न कोई प्लानिंग। कहानी महज एक आधे घंटे के कॉल से शुरू हुई। और फिर क्या था चट मंगनी और पट ब्याह। इस शादी से एक बेटा आजाद हुआ, लेकिन 2021 में दोनों ने अपनी-अपनी जिंदगियों को अहमियत देते हुए शादी तोड़ दी। लेकिन दोस्ती और एहसास बरकरार रहा। अब आमिर 61 की उम्र में गौरी स्प्रैट से शादी कर रहे हैं। गौरी तलाकशुदा हैं, जिनकी पिछली शादी से एक बेटा है।

आमिर महज 20 साल के थे। वो बॉम्बे की जिस बिल्डिंग के चौथे माले पर रहते थे, उसके ठीक सामने एयर इंडिया की बिल्डिंग थी। दोनों का फासला महज 100 मीटर था। एक दिन खिड़की पर खड़े आमिर की नजर सामने की बिल्डिंग की खिड़की पर पड़ी। सामने उन्हें गोरी-खूबसूरत लड़की दिखी। पहली नजर में ही आमिर को वो लड़की इस कदर पसंद आई कि उनका ज्यादातर समय खिड़की पर ही कटने लगा। कुछ दिनों बाद आमिर ने गौर किया कि वो लड़की भी देर तक खिड़की पर ही दिखती है, कहीं उसे भी वो पसंद तो नहीं करती।

जोधपुर में कवि शैलेश लोढ़ा की बेटी की शादी होगी, तीन दिन तक चलेंगे कार्यक्रम

कवि और अभिनेता शैलेश लोढ़ा की बेटी स्वरा की शादी 6 जुलाई को जोधपुर में होगी। आज शाम से शादी की रस्में शुरू हो गई हैं। 'संस्कृति स्वर' कार्यक्रम में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा भी पहुंचे।

वे पचपदरा से सीधे जोधपुर के होटल पहुंचे। यहां सीएम ने लोढ़ा परिवार से मुलाकात की और वर-वधू को आशीर्वाद दिया। स्वरा और शाश्वत 'उम्मेद भवन पैलेस' में ही सात फेरे लेंगे। शादी समारोह में शामिल होने के लिए मेहमानों का आना शुरू हो चुका है। सभी को 'उम्मेद भवन पैलेस' में ठहराया गया है, जहां उनका पारंपरिक राजस्थानी संस्कृति के साथ भव्य स्वागत किया गया।

शैलेश लोढ़ा की बेटी स्वरा लाइमलाइट से दूर रहना पसंद करती हैं। अपनी निजी जिंदगी को काफी प्राइवेट रखती हैं। स्वरा अपनी मां की तरह ही एक लेखिका हैं।

समारोह में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, लक्ष्यराज सिंह मेवाड़, योग गुरु स्वामी बाबा रामदेव, अभिनेता राकेश बेदी, कृष्णा अभिषेक, सेलो कंपनी के प्रदीप राठौड़, पीकेएमजी के चेयरमैन पंकज कर्णावट, श्री अधिकारी ब्रदर्स के संस्थापक मार्कंड अधिकारी, सीनियर पत्रकार सुधीर चौधरी, ब्रजेश सिंह और प्रसिद्ध हास्य कवि सुरेंद्र शर्मा समेत कई बॉलीवुड हस्तियां, कवि और साहित्यकार हिस्सा लेंगे।

अंशुला ने शेयर कीं मेहंदी सेरेमनी की झलकियां

बोलीं- 'जान्हवी-खुशी ने सरप्राइज दिया'

बोनी कपूर और दिवंगत मोना शौरी की बेटी अंशुला कपूर जिंदगी का नया सफर शुरू करने जा रही हैं। सोमवार 06 जुलाई को वे रोहन ठक्कर के साथ शादी रचाएंगी। विवाह पूर्व की रस्में शुरू हो चुकी हैं। अंशुला एक्टर अर्जुन कपूर की बहन हैं। अंशुला ने अपनी मेहंदी सेरेमनी की कुछ झलकियां सोशल मीडिया पर शेयर की हैं। अंशुला कपूर ने आज शनिवार को अपने इंस्टाग्राम अकाउंट से एक वीडियो शेयर किया है। इसमें उन्होंने अपनी मेहंदी सेरेमनी वाली पोशाक के बारे में बताया और इसके खूबसूरत डिजाइन आदि की डिटेल दी। इसी के साथ उन्होंने यह भी बताया कि मेहंदी सेरेमनी पर बहनों- जान्हवी कपूर और खुशी ने एक बड़ा सरप्राइज प्लान किया। अंशुला ने पोस्ट के साथ लिखा है, 'मैं अपनी मेहंदी के लिए ऐसी ड्रेस चाहती थी, जो परिवार का सम्मान करे, जिससे मैं जुड़ने जा रही हूं। यह शानदार ब्लू लहंगा पटोला की शानदार विरासत से प्रेरित है और साथ ही इसमें उनके सिग्नेचर मिरर वर्क को भी खूबसूरती से शामिल किया गया है। ये दोनों ही कलाएं गुजरात की टेक्सटाइल विरासत से गहराई से जुड़ी हुई हैं।

जान्हवी-खुशी ने दिया सरप्राइज, बोलीं- 'सांसें थम गईं'

अंशुला कपूर ने आगे लिखा है, 'इस ड्रेस ने मेरा दिल जीत लिया, वहीं उस दिन मानो मेरी सांसें ही रुक गईं। जान्हवी कपूर और खुशी कपूर ने पूरी मेहंदी सेरेमनी को एक सरप्राइज के तौर पर प्लान किया था। मुझे पता था कि कोई सेलिब्रेशन होने वाला है, लेकिन मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि उन्होंने क्या सोचा है। इतने बेशुमार प्यार के बीच इन सब चीजों को होते हुए देखना, एक ऐसी याद है, जिसे मैं हमेशा संजोकर रखूंगी'। बता दें कि खुशी और जान्हवी निमार्ता बोनी कपूर और दिवंगत श्रीदेवी की बेटियां हैं।

ड्रीम गर्ल का ग्रैंड जश्न हेमा मालिनी का डायमंड जुबली कॉन्सर्ट बना यादगार

एक्ट्रेस हेमा मालिनी ने ह्यलाइव इन कॉन्सर्टह्ल के साथ अपना डायमंड जुबली सेलिब्रेशन का आयोजन हुआ, जिसमें पद्मिनी कोल्हापुरे, पूनम ढिल्लों और विजयता पंडित भी शामिल हुईं।

सेलिब्रेशन में पहुंची से अदाकाराएं

एक वीडियो सोशल मीडिया पर काफी वायरल हो रहा है, जिसमें हेमा मालिनी के साथ पद्मिनी कोल्हापुरे, पूनम ढिल्लों और विजयता पंडित नजर आ रही हैं। ये दिग्गज कलाकार हेमा मालिनी के ह्यलाइव इन कॉन्सर्टह्ल में शामिल होने पहुंचीं थीं। वीडियो सामने आने के बाद फैंस काफी प्यार बरसा रहे हैं।

एक्ट्रेस हेमा मालिनी ने ह्यलाइव इन कॉन्सर्टह्ल के साथ अपना डायमंड जुबली सेलिब्रेशन का आयोजन हुआ, जिसमें पद्मिनी कोल्हापुरे, पूनम ढिल्लों और विजयता पंडित भी शामिल हुईं।

सेलिब्रेशन में पहुंची से अदाकाराएं

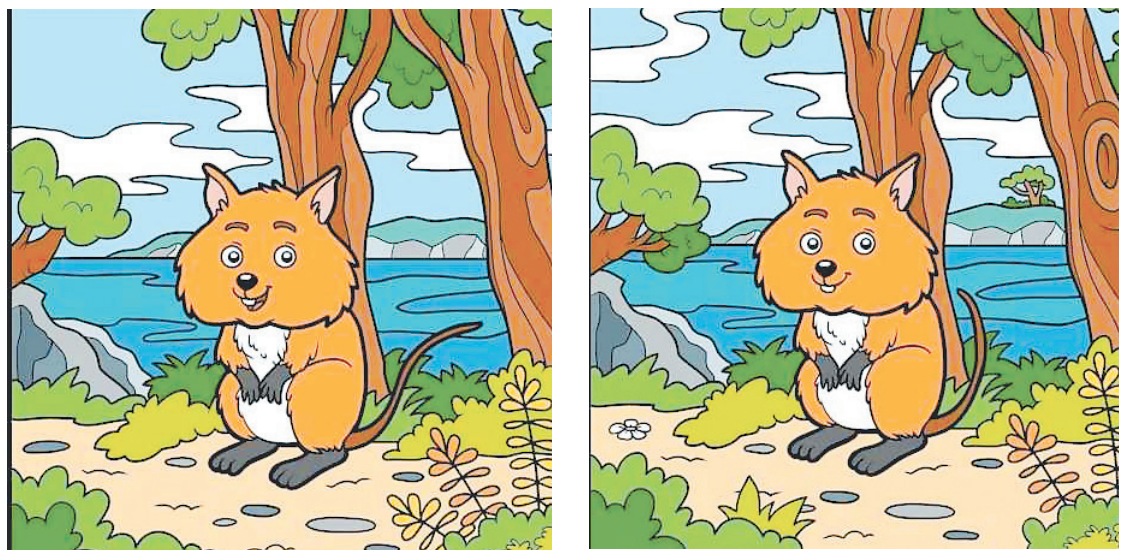

एक वीडियो सोशल मीडिया पर काफी वायरल हो रहा है, जिसमें हेमा मालिनी के साथ पद्मिनी कोल्हापुरे, पूनम ढिल्लों और विजयता पंडित नजर आ रही हैं। ये दिग्गज कलाकार हेमा मालिनी के ह्यलाइव इन कॉन्सर्टह्ल में शामिल होने पहुंचीं थीं।

जासूस बनिए....अंतर ढूंढो...

रंग भरकर चित्र बनाओ

जोक्स

एक अंकल ने एक बच्चे से पूछा -
पढ़ाई कैसी चल रही है...?
बच्चे ने जवाब दिया - अंकल, समंदर
जितना सिलेबस है,
नदी जितना पढ़ पाते हैं,
बाल्टी भर याद होता है,
गिलास भर लिख पाते हैं,
चुल्लू भर नंबर आते हैं,
उसी में डूब कर
मर जाते हैं...!

00000

पिता - पेपर कैसा गया...?
बेटा - पहला सवाल छूट गया, तीसरा आता नहीं था,
चौथा करना भूल गया, पांचवां नजर नहीं आया...!
पिता - और सवाल दो...?
बेटा - बस सिर्फ वो ही गलत हो गया...!

वर्ग पहेली

वर्ग पहेली

बाएं से दाएं

1. आदत, स्वभाव-4
4. सुरक्षित-4
7. जरुरतमंद-5
9. भीगा हुआ-2
11. मक्का-मदीना की यात्रा-2
12. सोना, धतूरा-3
14. धक्का देना-4
15. खानाबदोश, बंजारा-4
16. अंधेरा, अंधकार-3
18. खामी, बुरी आदत-2
19. ईसाई साध्वी-2
21. नायक का विलोम-5
25. करिश्मा, करामात-4
26. महीन व महंगे कपड़े का एक प्रकार-4

ऊपर से नीचे

1. अंग्रेज, विदेशी-3
2. लीन, मगन-2
3. पैंदा, तला-2
4. रिश्तेदार-2
5. थूक, लेस-2
6. तहजीब, सलीका-3
8. देह, काया-3
10. टोने-टोटकों वाली किताब-5
11. स्वदेशवासी-5
12. कपड़े की दीवार-3
13. अनुमान, आकलन-3
17. राजी करना-3
18. चश्मा-3
20. अनुकृति-3
21. पत्र, चिट्ठी-2
22. होंठ, अधर-2
23. मृत्यु देवता, यमराज-2
24. बीता हुआ दिन-2

माथा पच्ची

60		28		6		24	=	14
	■		■		■		■	
40		20		5		10	=	65
	■		■		■		■	
20		4		20		4	=	15
	■		■		■		■	
60		6		2		10	=	30
=	■	=	■	=	■	=	■	=
20		6		20		20	=	36 / 26

संकेत

खाली जगहों में आपको केवल (+), (-), (x) व (÷) के निशान लगाने हैं, जिनका उत्तर (=) पूर्णत: मेल खाता हो.

शब्दों का जाल

शब्दजाल में "डैनी" अभिनीत 10 फिल्मों के नाम ढूंढिए. दिए गए नाम ऊपर से नीचे व तिरछे हो सकते हैं.

मेरे अपने, छत्तीस घंटे, धर्मात्मा, द बर्निंग ट्रेन, बंदिश, दो उस्ताद, हीरो, आंधी तूफान, जवाब, बुलंदी

अष्टयोग

3		4			1	2
2	33		34	6	30	
5		7			3	
	42		25	1	22	6
	6	5			2	
	36		34	4	31	3
1	2	3		5		7

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक लिखना अनिवार्य है. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों ओर के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

माथा पच्ची का हल

45	+	3	+	61	-	10	=	66
+	■	+	■	-	■	x	■	+
20	x	5	-	51	-	25	=	24
+	■	+	■	-	■	÷	■	+
50	-	40	+	10	+	25	=	45
-	■	-	■	+	■	+	■	-
70	+	18	+	27	-	40	=	75
=	■	=	■	=	■	=	■	=
45	+	30	+	27	-	50	=	[illegible]

अष्टयोग का हल

3	5	4	6	7	1	2
2	33	1	36	6	27	5
7	6	5	4	3	2	1
4	42	2	25	1	22	6
5	6	7	1	2	3	4
6	36	6	32	4	34	3
1	2	3	4	5	6	7

शब्दजाल का हल

सूडोकु नवताल-

***** कठिनतम

			4				3	
		6		2		4		
		8			5			
	3						7	
7				4				9
	9						5	
			2			1		
		1		7		6		
	5				3			

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल का हल

7	8	5	4	2	9	6	3	1
3	6	4	1	5	7	8	9	2
9	2	1	6	3	8	7	4	5
6	5	3	2	8	4	9	1	7
1	7	2	3	9	6	4	5	8
4	9	8	7	1	5	2	6	3
2	4	7	5	6	1	3	8	9
5	3	9	8	4	2	1	7	6
8	1	6	9	7	3	5	2	4

खामेनेई की विदाई में काले कपड़े पहने लाखों लोग पहुंचे

पहुंचे:खून बहेगा, बदला-बदला के नारे लगाए; ट्रम्प बोले- ईरान को एक हफ्ते की छुट्टी दी

ईरान के पूर्व सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह अली खामेनेई को आखिरी विदाई देने के लिए शनिवार को लाखों लोग तेहरान के ग्रैंड मोसल्ला में जुटे हैं। शिया परंपरा के मुताबिक काले कपड़े पहने लोग छाती पीटकर मातम मनाते दिखे। इस दौरान लोगों ने खून बहेगा, अमेरिका मुदार्बाद और बदला, बदला जैसे नारे भी लगाए।

तेहरान में 3 जुलाई से खामेनेई के अंतिम संस्कार से जुड़ी रस्में शुरू हो गई हैं जो 9 जुलाई तक चलेगी। कल शुक्रवार को कार्यक्रम में 100 से ज्यादा देशों के प्रतिनिधि शामिल हुए। हालांकि रूस, चीन, भारत और तुर्किये जैसे देशों के टॉप लीडर्स ने इससे दूरी बरती। ईरान की तरफ से न्योता भेजे जाने के बावजूद इन्होंने अपने निचले स्तर के प्रतिनिधियों को भेजा। इस बीच अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने दावा किया कि अमेरिका ने खामेनेई के अंतिम संस्कार के लिए ईरान को एक हफ्ते की छुट्टी दी है। ट्रम्प ने कहा कि उन्होंने मानवता के नाते ऐसा किया है। कार्यक्रम खत्म होने के तुरंत बाद ईरान को अमेरिकी शर्तें माननी होंगी।

खामेनेई के अंतिम संस्कार की शुरूआत

ईरान के पूर्व सुप्रीम लीडर खामेनेई का ताबूत तेहरान के इमाम खुमैनी ग्रैंड मुसल्ला पहुंचाया गया। यहां उनके अंतिम संस्कार के कार्यक्रम में कई देशों के प्रतिनिधिमंडल शामिल हुए। अली खामेनेई के साथ उनकी 14 महीने की पोती, बेटी, पत्नी और दामाद को भी अंतिम श्रद्धांजलि दी गई।

अंतिम संस्कार के लिए तेहरान में कड़ी सुरक्षा

खामेनेई के अंतिम संस्कार को लेकर तेहरान की सड़कों पर सेना और पुलिस की भारी तैनाती की गई है। सभी मुख्य सड़कों, चौराहों और सरकारी इमारतों के बाहर सेना और पुलिस बल तैनात है। मेन रोड्स पर मिलिट्री गाड़ियां पहरा दे रही हैं।

खामेनेई के अंतिम संस्कार में शामिल आम लोगों के लिए तेहरान में मेट्रो और सरकारी बसें मुफ्त रहीं। साथ ही होटल किराए में 50% की छूट और स्कूलों-मस्जिदों में ठहरने की व्यवस्था की गई। दूसरे शहरों से लोगों को लाने के लिए स्पेशल ट्रेनें भी चलाई गईं।

खामेनेई की अंतिम यात्रा 5 शहरों से गुजरेगी

अली खामेनेई की अंतिम यात्रा पहले ईरान के तेहरान, कोम से इराक के कर्बला, नजफ से होकर गुजरेगी। आखिर में 9 जुलाई को मशहद में सुपुर्द-ए-खाक किया जाएगा।

अंतिम संस्कार के बाद अमेरिका-ईरान वार्ता फिर शुरू होगी: कतर ने बताया कि खामेनेई के अंतिम संस्कार के बाद अमेरिका-ईरान वार्ता का अगला दौर फिर शुरू होगा। वहीं ईरान ने cअएअ को फोर्डो, नतांज और इस्फहान परमाणु ठिकानों के निरीक्षण की अनुमति देने से इनकार कर दिया है।

शहबाज शरीफ बोले- खामेनेई का प्रभाव पीढ़ियों तक याद रखा जाएगा

पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने तेहरान पहुंचकर अयातुल्ला अली खामेनेई के अंतिम संस्कार में हिस्सा लिया। सोशल मीडिया पर शहबाज शरीफ ने लिखा कि खामेनेई की बुद्धिमत्ता, नेतृत्व और ईरान के साथ पूरे क्षेत्र पर उनके गहरे प्रभाव को आने वाली पीढ़ियां भी याद रखेंगी। शरीफ के साथ पाकिस्तान का उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल भी तेहरान पहुंचा। इसमें पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के अध्यक्ष बिलावल भुट्टो जरदारी, नेशनल असेंबली के स्पीकर सरदार अयाज सादिक और पाकिस्तान के सेना प्रमुख आसिम मुनीर भी शामिल हैं। ईरान के खुफिया मंत्रालय ने शनिवार को कहा कि अमेरिका-इजराइल के हमलों में मारे गए खामेनेई और दूसरे लोगों की मौत का बदला लिया जाएगा। मंत्रालय ने कहा कि हमारे जख्म तब तक नहीं भरेंगे जब तक हत्या के जिम्मेदार लोगों से बदला नहीं लिया जाता।

खामेनेई की अंतिम संस्कार से जुड़े 3 सवाल-जवाब

1. चार महीने की देरी क्यों हुई?

जब खामेनेई की मौत हुई, तब ईरान-अमेरिका युद्ध चल रहा था। ईरान के कई हिस्सों में लगातार बमबारी हो रही थी। ऐसे में शव यात्रा के दौरान लाखों लोगों की जान को खतरा हो सकता था।

2. खामेनेई का अंतिम संस्कार या फिर शक्ति प्रदर्शन?

3 से 9 जुलाई तक चलने वाला अंतिम संस्कार सिर्फ एक शोक सभा नहीं, बल्कि ईरान का एक शक्ति प्रदर्शन भी है। इसमें करीब 2 करोड़ लोगों के पहुंचने की उम्मीद है। इसमें 100 से ज्यादा देशों के प्रतिनिधि पहुंचे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, एक्सपर्ट का कहना है कि सड़कों पर 'लाखों-करोड़ों' लोगों की भीड़ जुटाकर ईरान दुनिया को संदेश दे रहा है कि उसकी शासन व्यवस्था और 'इस्लामिक क्रांति' आज भी पूरी तरह मजबूत है।

3. संस्कार के लिए मुहर्रम का महीना क्यों चुना गया

शिया इस्लाम में यह महीना शोक और शहादत से गहराई से जुड़ा है। 7वीं सदी में इमाम हुसैन की शहादत इसी महीने में हुई थी, जो शिया धर्म में बेहद अहम दर्जा रखते हैं। खामेनेई का वंश उनसे जुड़ा माना जाता है।

खामेनेई के अंतिम संस्कार में शामिल नहीं होंगे बेटे मुजतबा

इजराइली हमले का खतरा; 7 दिन बाद दफनाए जाएंगे पूर्व सुप्रीम लीडर

ब्रह्मास्त्र ▸▸ ईरान

ईरान के पूर्व सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई के बेटे मुजतबा खामेनेई सुरक्षा कारणों से अपने पिता के अंतिम संस्कार में शामिल नहीं होंगे। यह जानकारी ईरान के सुप्रीम लीडर के एक प्रतिनिधि के हवाले से सामने आई है।

रिपोर्ट के मुताबिक, सुरक्षा एजेंसियों को इजराइली हमले का डर है इसलिए उन्होंने मुजतबा को अंतिम संस्कार समारोह से दूर रहने की सलाह दी है। हालांकि, इस बारे में अभी आधिकारिक तौर पर ज्यादा जानकारी साझा नहीं की गई है।

अयातुल्ला अली खामेनेई को 9 जुलाई को मशहद शहर में दफनाया जाएगा। उनके अंतिम संस्कार कार्यक्रम की शुरूआत 4 जुलाई से होगी। भारत सरकार की ओर से विदेश राज्य मंत्री पबित्र मार्गेरिटा और बिहार के राज्यपाल सैयद अता हसनैन अंतिम संस्कार में शामिल होंगे। ईरान की संसद के अध्यक्ष मोहम्मद बाघेर गालिबाफ ने देशवासियों से पूर्व सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई के अंतिम संस्कार में बड़ी संख्या में शामिल होने की अपील की है। उन्होंने कहा कि लोगों की मौजूदगी दुनिया को यह मैसेज दें कि खामेनेई के खून का बदला लिया जाएगा।

अल जजीरा के मुताबिक, गालिबाफ ने कहा कि पूरी दुनिया को हमारे बदले की आवाज सुनाई देनी चाहिए। उन्होंने खास तौर पर युवाओं, शहीदों के परिवारों, युद्ध में घायल लोगों और महिलाओं-पुरुषों से अंतिम संस्कार में पहुंचने की अपील की।

भारत सरकार ने गुरुवार को कहा कि ईरान के पूर्व सुप्रीम लीडर अयातुल्लाह अली खामेनेई के अंतिम संस्कार में भारत की ओर से केंद्रीय विदेश राज्य मंत्री पबित्र मार्गेरिटा और बिहार के राज्यपाल सैयद अता हसनैन शामिल होंगे। विदेश मंत्रालय के मुताबिक, दोनों नेता 3 जुलाई को ईरान रवाना होंगे।

ईरान के राष्ट्रपति मसूद पजशकियान ने देशवासियों से अयातुल्लाह अली खामेनेई के अंतिम संस्कार में बड़ी संख्या में शामिल होने की अपील की है। उन्होंने कहा कि खामेनेई की मौत अंत नहीं, बल्कि ईरान के लिए एक नए अध्याय की शुरूआत है।

उदयपुर में विला में छिपे कुख्यात डकैत को पकड़ा

ब्रह्मास्त्र ▸▸ उदयपुर

उदयपुर की सुखेर थाना पुलिस ने 2 बड़ी कार्रवाइयों को अंजाम दिया है। पुलिस ने जहां एक तरफ जिला जज (डिस्ट्रिक्ट जज) के नाम का झांसा देकर शोरूम से इलेक्ट्रिक स्कूटर (एश) ठगने वाले शातिर बदमाश को दबोचा है, वहीं दूसरी तरफ एक नामी विला में दबिश देकर लूट और डकैती के कुख्यात इनामी बदमाश को अवैध पिस्टल और 5 जिंदा कारतूस के साथ गिरफ्तार किया है।

सुखेर थानाधिकारी भरत योगी ने बताया- न्यू भूपालपुरा 80 फीट रोड पर दिनेश काबरा का 'केपी इलेक्ट्रो व्हील' नाम से इलेक्ट्रिक स्कूटर का शोरूम है। बीती 24 जून को शोरूम पर चित्रकूट नगर (भुवाणा) निवासी दीपक उर्फ गोलू आया। उसने शोरूम संचालक को जिला जज के नाम का झांसा दिया और कहा कि 'साहब' को स्कूटर पसंद करवाना है, इसलिए इसे दिखाने ले जा रहा हूं।

आरोपी ने आधे घंटे में वापस लौटने की बात कही थी, लेकिन वह करीब 60 हजार रुपए कीमत का काले रंग का स्कूटर लेकर फरार हो गया। काफी तकाजा करने के बाद भी जब उसने स्कूटर नहीं लौटाया, तो पीड़ित ने सुखेर थाने में मामला दर्ज कराया। पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए आरोपी को धरदबोचा।

मामला दर्ज होने के बाद पुलिस ने तकनीकी सहयोग से महज 24 घंटे के भीतर आरोपी दीपक उर्फ गोलू (28) को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से स्कूटर बरामद कर लिया। पुलिस जांच में सामने आया कि आरोपी बेहद शातिर है।

वह लोगों को नौकरी लगवाने और कोर्ट में फैसला अपने पक्ष में कराने का झांसा देकर पहले भी ठगी कर चुका है। आरोपी के खिलाफ अंबामाता और हिरणमगरी थानों में भी मामले दर्ज

दावा- हमले में 30 पाकिस्तानी जवान मारे

कैंप में विस्फोटकों से भरी गाड़ी से ब्लास्ट किया; पाकिस्तान सरकार ने पुष्टि नहीं की

ब्रह्मास्त्र ▸▸ बलूच

बलूच लिबरेशन आर्मी (BLA) ने दावा किया है कि उसने पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत के ग्वादर जिले के जिवानी इलाके में पाकिस्तान कोस्ट गार्ड्स के कैंप पर हमला किया है।

BLA के मुताबिक, 3 जुलाई की शाम करीब 6:32 बजे उसके मजीद ब्रिगेड के एक हमलावर ने विस्फोटकों से भरी गाड़ी को कैंप में घुसाकर विस्फोट कर दिया।

संगठन का दावा है कि इस हमले में 30 से ज्यादा गार्ड्स मारे गए और दर्जनों घायल हुए हैं। हालांकि, पाकिस्तान सरकार या सेना ने अब तक इस दावे की आधिकारिक पुष्टि नहीं की है। BLA ने दावा किया कि विस्फोट इतना शक्तिशाली था कि पाकिस्तान कोस्ट गार्ड्स का कैंप पूरी तरह तबाह हो गया। संगठन के मुताबिक, धमाके के तुरंत बाद उसके फतेह स्क्वाड के लड़ाकों ने कैंप पर हमला किया और बच गए सुरक्षाकर्मियों को नजदीक से निशाना बनाया।

BLA ने कहा कि मलबे में कई सुरक्षाकर्मी दबे हो सकते हैं, इसलिए मरने वालों की संख्या बढ़ सकती है। इछअ के इन दावों की स्वतंत्र रूप से पुष्टि नहीं हो सकी है। इछअ ने अपने बयान में दावा किया कि हमलावर की पहचान अत्ताउल्लाह बलोच उर्फ अजमल के रूप में हुई है, जिसे संगठन ने अपने मजीद ब्रिगेड का सदस्य बताया। इछअ का कहना है कि वह इस ऑपरेशन से जुड़ी अधिक जानकारी और वीडियो अपने आधिकारिक चैनलों के जरिए जारी करेगा। बलूच लिबरेशन आर्मी (BLA) एक संगठन है जो पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत की स्वतंत्रता के लिए लड़ रहा है। इसकी स्थापना 2000 के दशक की शुरूआत में हुई और इसे कई देशों द्वारा आतंकी संगठन भी घोषित किया गया है।

BLA का दावा है कि बलूचिस्तान के प्राकृतिक संसाधनों का शोषण हो रहा है और बलूच लोगों के अधिकार छीन लिए गए हैं। यह संगठन पाकिस्तानी सेना, सरकार और चीनी प्रोजेक्ट्स जैसे उढएउ को निशाना बनाता रहा है।

BLAअपनी गुरिल्ला शैली के लिए जाना जाता है। यानी पहाड़ी इलाकों में छिपकर सेना पर हमला करना और तुरंत वापस लौट जाना।

6500 प्रतिभागियों को पीछे छोड़ श्रीजा गुप्ता बनीं 'मिस-राजस्थान 2026

ब्रह्मास्त्र ▸▸ उज्जैन

राजस्थान के सबसे पुराने फैशन एवं मॉडलिंग प्लेटफॉर्म मिस राजस्थान के 28वें एडिशन का ग्रैंड फिनाले शनिवार को बिरला ऑडिटोरियम में आयोजित हुआ। राज्यभर से चयनित टॉप-28 फाइनलिस्ट्स ने अपने स्टाइल, पर्सनैलिटी और कॉन्फिडेंस का शानदार प्रदर्शन किया। करीब 6500 प्रतिभागियों के बीच हुए कई चरणों के ऑडिशन और ग्रूमिंग से गुजरने के बाद श्रीजा गुप्ता ने सभी को पीछे छोड़ मिस राजस्थान 2026 का ताज अपने नाम किया। वहीं वंशिका नूनिया फर्स्ट रनर-अप, शगुन राठौड़ सेकंड रनर-अप, सुहानी जैन थर्ड रनर-अप, निहारिका माथुर फोर्थ रनर-अप, कुसुम सोनी फिफ्थ रनर-अप और लक्षिता गोदारा सिक्स्थ रनर-अप चुनी गईं।

टॉप-28 मॉडल्स ने रैंप पर दिखाया फैशन और कॉन्फिडेंस मिस राजस्थान की डायरेक्टर एकता जैन ने बताया कि इस साल प्रतियोगिता के लिए प्रदेशभर से करीब 6500 युवतियों ने आवेदन किया था। ऑडिशन, ग्रूमिंग और विभिन्न राउंड के बाद टॉप-28 मॉडल्स को ग्रैंड फिनाले के लिए चुना गया। फाइनलिस्ट्स ने रैंप वॉक, पर्सनैलिटी, कम्युनिकेशन स्किल और प्रश्नोत्तर राउंड में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर निर्णायकों को प्रभावित किया। डिजाइनर कलेक्शन और रॉयल ज्वेलरी बने आकर्षण का केंद्र फ्यूजन ग्रुप और रूवी डिजिटल के सहयोग से आयोजित इस फैशन शो के आयोजक योगेश मिश्रा और निमिषा मिश्रा ने बताया कि पहले राउंड में सभी 28 मॉडल्स ने निवारा कॉलेज ऑफ डिजाइनिंग के आउटफिट्स पहनकर ओपनिंग एक्ट किया।

अमेरिका और ईरान एक-दूसरे पर हमले रोकने पर राजी

ईरान बोला- 30 दिन तक होर्मुज हमारे कंट्रोल में

ब्रह्मास्त्र ▸▸ वाशिंगटन

अमेरिका और ईरान ने फिलहाल एक-दूसरे पर सैन्य हमले रोकने पर सहमति जताई है। दोनों देशों के बीच पिछले 3 दिनों से हमले जारी थे।

अमेरिकी अधिकारियों के मुताबिक, अमेरिका-ईरान में 17 जून को हुए समझौते के सभी बिंदुओं पर बातचीत जारी रहेगी। इसी सिलसिले में मंगलवार को कतर में दोनों देशों के प्रतिनिधि तकनीकी स्तर की वार्ता करेंगे। समझौते के तहत होर्मुज स्ट्रेट से गुजरने वाले व्यावसायिक जहाजों की आवाजाही नहीं रोकी जाएगी। हाल के दिनों में इसी जलमार्ग को लेकर दोनों देशों के बीच तनाव बढ़ गया था। अमेरिका ने ईरान के मिसाइल और रडार ठिकानों पर कार्रवाई की थी, जबकि ईरान ने जवाब में कुवैत और बहरीन में अमेरिकी सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया था। इसके बाद दोनों देशों ने फिलहाल सैन्य कार्रवाई रोककर बातचीत के जरिए समाधान तलाशने पर सहमति जताई है। अमेरिका का ईरान पर हमलाः अमेरिका ने लगातार दूसरे दिन ईरान पर हवाई हमले किए। इस दौरान किश्म द्वीप, सिरिक और बंदर-ए-लेंगेह को निशाना बनाया गया। इसके बाद ईरान ने जवाबी कार्रवाई में बहरीन और कुवैत में अमेरिकी सैन्य ठिकानों पर हमले किए। ईरान बोला- 30 दिन तक होर्मुज हमारे कंट्रोल मेंः ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने कहा कि अगले 30 दिनों तक होर्मुज पूरी तरह ईरान के नियंत्रण में रहेगा। उन्होंने चेतावनी दी कि अमेरिका ने आगे हमला किया तो हालात और ज्यादा गंभीर हो जाएंगे। ट्रम्प ने ईरान को धमकी दीः अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा है कि अगर ईरान नहीं सुधरा तो उसका अस्तित्व नहीं बचेगा। उन्होंने कहा कि अगर जरूरत पड़ी तो अमेरिका अपने शुरू किए गए सैन्य अभियान को पूरी तरह अंजाम तक पहुंचाएगा। ईरान बोला अमेरिका को नुकसान उठान पड़ेगाः ईरान की इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स ने कहा कि आने वाले दिनों में क्षेत्र में मौजूद अमेरिकी सैन्य ठिकानों को भारी नुकसान उठाना पड़ेगा।

ईरान से बातचीत के लिए ट्रम्प दो खास सहयोगी भेजेंगे

अमेरिका ने कहा है कि ईरान के साथ मंगलवार को कतर की राजधानी दोहा में उच्चस्तरीय बैठक होगी। इसमें राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के दो करीबी सहयोगी स्टीव विटकॉफ और जेरेड कुशनर हिस्सा लेंगे। इसके साथ ही दोनों देशों की तकनीकी टीमों के बीच भी अलग से बातचीत होगी। सोमवार को ट्रम्प ने सोशल मीडिया पर दावा किया कि ईरान ने बातचीत का अनुरोध किया है और बैठक दोहा में होगी। हालांकि ईरान ने इससे इनकार किया था। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने सोशल मीडिया पर दावा किया है कि ईरान ने बातचीत की अपील की है और दोनों देशों के बीच मंगलवार को कतर की राजधानी दोहा में बैठक होगी।

हालांकि, ईरान ने ट्रम्प के इस दावे से अलग बयान दिया है। ईरान के उप विदेश मंत्री काजेम गरीबाबादी ने कहा कि इस सप्ताह कतर में अमेरिकी अधिकारियों के साथ तकनीकी टीमों की कोई बैठक तय नहीं है। यानी अमेरिका और ईरान दोनों के दावे अलग-अलग हैं।

अमेरिका और ईरान के बीच शुरूआती समझौते पर तनाव बढ़ने और होर्मुज से गुजर रहे एक जहाज पर हमले के बाद जहाजों की आवाजाही काफी कम हो गई। समुद्री ट्रैकिंग कंपनी केप्लर के आंकड़ों के मुताबिक, शनिवार को कुल 29 मालवाहक जहाज होर्मुज जलडमरूमध्य से गुजरे, जबकि रविवार को यह संख्या घटकर सिर्फ 12 रह गई। यह पिछले सप्ताह की तुलना में बड़ी गिरावट है। पिछले हफ्ते अमेरिका और अमेरिका के बीच हुए एक समझौता ज्ञापन के बाद इस रास्ते पर जहाजों की आवाजाही युद्ध शुरू होने के बाद सबसे ऊंचे स्तर पर पहुंच गई थी। बुधवार को 70 जहाजों ने इस जलमार्ग को पार किया था। ईरान ने बिना मंजूरी वाले शिपिंग मार्गों का इस्तेमाल नहीं करने की चेतावनी दी थी। इसके बावजूद कई जहाज अलग-अलग रास्तों से इस स्ट्रेट को पार करते रहे।

■ वर्ष-12 अंक-242 मूल्य- 2 रु. मध्यप्रदेश छत्तीसगढ़ गुजरात महाराष्ट्र राजस्थान उत्तरप्रदेश उत्तरांचल मालवा डिवीजन 402/2024-2026 आर एन आई क्रमांक 2013/57651

सुभाषितानि

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्त्या श्रीसूक्तजापिनाम्॥

भावार्थ : भक्तिपूर्वक श्री सूक्त का जप करनेवाले, पुण्यशाली लोगों को न क्रोध होता है, न ईर्ष्या होती है, न लोभ ग्रसित कर सकता है और न उनकी बुद्धि दूषित ही होती है।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

दैनिक ब्रह्मास्त्र

उज्जैन, रविवासरः 05 जुलाई, 2026

वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः॥

भावार्थ : हे गरुड़! आप सोमपान करें। वृत्रासुर के विनाशक इन्द्र सोमपान करें। वे गरुड तथा इन्द्र धनवान सोमपान करने की इच्छा वाले के सोम को मुझ सोमपान की अभिलाषा वाले को प्रदान करें।

सम्पादकीयम्

भाजपायाः विधिव्यवस्था निर्वाचनविषयः कृतः

राजनैतिकहिंसा कथमपि न्याय्यं न भवितुम् अर्हति। अस्मिन् समये राज्येन परिवर्तनार्थं मतदानं कृतम्, एतत् परिवर्तनं राजनैतिकपरिदृश्ये अपि प्रतिबिम्बितव्यम्। भाजपायाः विधिव्यवस्था निर्वाचनविषयः कृतः आसीत्। अधुना सर्वकारे स्थित्वा सवेषां सुरक्षायाः उत्तरदायित्वं तेषां एव वर्तते। न कश्चित् कारणात् स्वहस्ते विधिं ग्रहीतुं अर्हति। सुधारः नास्ति : निर्वाचनोत्तरहिंसा बङ्गदेशे एकः दीर्घकालीनः रोगः अस्ति। २०२१ तमे वर्षे विधानसभानिर्वाचनानन्तरं अपि शतशः हिंसाप्रकरणाः पञ्जीकृताः। तस्मिन् समये राष्ट्रियमानवाधिकारआयोगेन १९०० तः अधिकानां प्रकरणानाम् अन्वेषणं कृतम् आसीत्। अस्मिन् सन्दर्भे स्थानीय पुलिसप्रशासनसम्बद्धाः गम्भीराः प्रश्नाः उत्पन्नाः। परन्तु २०२३ तमस्य वर्षस्य पंचायतनिर्वाचने न च २०२४ तमे वर्षे सामान्यनिर्वाचने अस्मात् किमपि पाठं न ज्ञातम्। अस्मिन् समये अपि निर्वाचनपरिणामस्य घोषणायाः अनन्तरमेव विभिन्नस्थानात् तोड़फोड़स्य, शारीरिकप्रहारस्य च सूचनाः उद्भूताः। सुवेन्दु अधिकारी का पीए चन्द्रनाथ रथ वध हुआ। परिणामस्य केवलं त्रयः दिवसाः अन्तः बङ्गालपुलिसः २०० तः अधिकाः प्रकरणाः पञ्जीकृत्य ४०० तः अधिकाः व्यक्तिः गृहीतवान् आसीत्।

शक्तिशाली टीजर तथा रिलीज तिथि प्रकट

रजनीकान्तस्य 'जेलर २' अस्मिन् दशहरायां सिनेमागृहेषु रॉक करणीयः

ब्रह्मास्त्र ›› चेन्नई

सुपरस्टार रजनीकान्तस्य प्रशंसकानां दीर्घप्रतीक्षा अन्ततः समाप्तम्। सन पिक्चर्स् इत्यनेन बहुप्रतीक्षितस्य चलच्चित्रस्य 'जेलर २' इत्यस्य प्रदर्शनस्य तिथिः आधिकारिकतया घोषिता अस्ति। नेल्सन दिलीपकुमारेन निर्देशितं चलच्चित्रं दशहरा-महोत्सवस्य सङ्गमेन अक्टोबर-मासस्य १५ दिनाङ्के विश्वव्यापी सिनेमागृहेषु प्रदर्शितं भविष्यति। रिलीज-तिथि-घोषणया सह एकः शक्तिशाली टीजरः अनावरणं कृतम् अस्ति, येन प्रेक्षकाणां मध्ये उत्साहः अधिकं वर्धितः अस्ति। सामाजिकमाध्यमेषु रिलीजस्य तिथिं साझां कृत्वा सन पिक्चर्स् इत्यनेन घोषितं यत् 'जेलर २' इति चलच्चित्रं वैश्विकरूपेण १५ अक्टोबर दिनाङ्के सिनेमागृहेषु आगमिष्यति।यद्यपि तत्सहितं एक्शन-पैक्ड् टीजरं कथानकं न प्रकाशयति तथापि आश्चर्यजनक-दृश्यानां उच्च-ओक्टेन-एक्शन-सीक्वेंसानां च माध्यमेन प्रत्याशां निर्माति। टीजर रजनीकान्तस्य लोकप्रियस्य पात्रस्य 'टाइगर मुथुवेल् पाण्डियन' इत्यस्य झलकं प्रददाति। यद्यपि तस्य मुखं पूर्णतया न प्रकाशितं तथापि सः नूतनं अत्यन्तं भयानकं च मिशनं प्रति गच्छन् दर्शितः, पूर्वापेक्षया दूरतरं आव्हानं सम्मुखीभवति इति संकेतं ददाति।

'जेलर २' इति २०२३ तमे वर्षे निर्मितस्य 'जेलर'-चलच्चित्रस्य उत्तरकथा अस्ति। प्रथमं चलच्चित्रं विश्वव्यापीरूपेण प्रायः ६०४.५० कोटिरूप्यकाणि अर्जितवान्, वर्षस्य सफलतमासु तमिलचलच्चित्रेषु च स्थानं प्राप्तवान्। तस्याः सफलतायाः अनन्तरं उत्तरकथायाः प्रेक्षकाणां अपेक्षाः अविश्वसनीयतया अधिकाः सन्ति।

रजनीकांतः पुनः एकवारं मुथुवेल पाण्डियनस्य भूमिकां पुनः करिष्यति। कन्नडभाषायाः सुपरस्टार शिवराजकुमारः, मलयालम-अभिनेता मोहनलालः च स्वस्व-भूमिकायां पुनः आगच्छन्तः सन्ति, अस्मिन् समये चलच्चित्रे अतः अपि बृहत्तरं स्टार-कास्ट्-समूहः अस्ति। एस.जे. सूर्यः, मिथुन चक्रवर्ती, योगी बाबू, राम्या कृष्णन, मिर्ना मेनन् च प्रमुखभूमिकासु दृश्यन्ते। अभिनेत्री विद्या बालनः अस्मिन् चलच्चित्रेण तमिल-चलच्चित्रे पदार्पणं कर्तुं निश्चिता अस्ति, एषा सम्भावना प्रेक्षकाणां मध्ये महत्त्वपूर्णं उत्साहं जनयति। चलच्चित्रस्य परितः एकः प्रमुखः वातार्लापः अभिनेता ऋतिकरोशनस्य प्रवेशः अस्ति। मीडिया-सञ्चारमाध्यमानां अनुसारं सः संकटकाले तस्य साहाय्यार्थं आगच्छति रजनीकान्तस्य चरित्रस्य निकटमित्रस्य भूमिकां निर्वहन् शक्तिशालिनः विशेषभूमिकायां दृश्यते। शाहरुखखानः पूर्वं अस्याः भूमिकायाः विषये विचारितः आसीत् किन्तु व्यस्तशूटिंग कार्यक्रमस्य कारणात् परियोजनायां सम्मिलितुं न शक्तवान्।

मुख्यस्य छायाचित्रणस्य समापनम् अपि कृत्वा अपि चलच्चित्रस्य दलं अतिरिक्तदृश्यानां शूटिंग कर्तुं अन्तिमसम्पादनसमायोजनं च कर्तुं चेन्नैनगरं प्रत्यागतवान् सङ्गीतस्य रचना पुनः अनिरुद्धरविचन्दरेण कृता अस्ति; सद्यः एव प्रदर्शितं गीतं 'हुकुम रिलोडेड्' प्रेक्षकाणां कृते पूर्वमेव हिट् अभवत्, येन चलच्चित्रस्य प्रतीक्षां अधिकं वर्धते। रजनीकान्तस्य अपारलोकप्रियतायाः, प्रथमस्य चलच्चित्रस्य अभिलेख-भङ्गसफलतायाः, तारक-तारक-कास्ट्, बृहत्-स्तरीय-एक्शन-सीक्वेंस-इत्यनेन च चालितं 'जेलर २' वर्षस्य बृहत्तमेषु भारतीय-चलच्चित्रेषु अन्यतमम् इति प्रशंसितम् अस्ति अधुना चलच्चित्रप्रेमिणः १५ अक्टोबर दिनाङ्कस्य उत्सुकतापूर्वकं प्रतीक्षां कुर्वन्ति, यदा रजनीकान्तः स्वस्य प्रतिष्ठितस्य पात्रस्य पुनः प्रदर्शनं कृत्वा।

पूर्वं सः स्वयमेव कस्मिन्

अपि निर्वाचने अभ्यथीरूपेण न स्थितवान् आसीत्

ब्रह्मास्त्र ›› पटना

पूर्वं सः स्वयमेव कस्मिन् अपि निर्वाचने अभ्यथीरूपेण न स्थितवान् आसीत्। फलतः यदि सः बांकीपुरतः प्रतिस्पर्धां करोति तर्हि तस्य प्रथमः प्रत्यक्षनिर्वाचनप्रतियोगिता भविष्यति।

अधुना एव गतमासे प्रशांतकिशोरः सूचितवान् यत् यदि तस्य दलेन तं उम्मीदवाररूपेण स्थापितं तर्हि सः प्रतिस्पर्धां कर्तुं न लज्जयिष्यति। सः अवदत् यत् यदि तस्य निर्वाचनं प्रतिस्पर्धया भाजपा-सदृढतमस्य दुर्गस्य उल्लङ्घनं भवितुम् अर्हति तर्हि सः आव्हानं स्वीकुर्वितुं पूर्णतया सज्जः अस्ति। सः अपि उक्तवान् आसीत् यत् बांकीपुर-विधानसभा-क्षेत्रं विगत-४० तः ४५ वर्षाणि यावत् भाजपायाः कृते अदम्यदुर्गं वर्तते, तत्रत्याः जनसमुदायस्य नूतनविकल्पस्य समयः आगतः इति।

प्रशांतकिशोरः अपि एतत् उपनिर्वाचनं बिहारस्य नूतनस्य एनडीए-सर्वकारस्य मुख्यमन्त्री सम्राटचौधरी-नेतृत्वस्य च प्रथमा प्रमुखा परीक्षा इति वर्णितवान् आसीत्। सः अवदत् यत् एतत् निर्वाचनं केवलं एकस्य आसनस्य विषये न भविष्यति अपितु नूतनसर्वकारस्य प्रति जनभावनायाः दिशां निर्धारयिष्यति इति। सः दावान् अकरोत् यत् यदि विपक्षः एकीकृत्य जनसम्बद्धान् विषयान् प्रबलतया उत्थापयति तर्हि बांकीपुरसदृशे पारम्परिकदुर्गे अपि राजनैतिकपरिवर्तनं सम्भवं भविष्यति। इदानीं भाजपायाः अस्य आसनस्य कृते अद्यापि स्वस्य उम्मीदवारस्य घोषणा न कृता, यद्यपि एतत् दलस्य प्रतिष्ठायाः विषयः इति मन्यते। अत्र भाजपा-पक्षः विगतेषु अनेकेषु निर्वाचनेषु निरन्तरं विजयं प्राप्नोति, तथा च, तत् आसनं धारयितुं सर्वाणि विरामस्थानानि बहिः आकर्षयितुं संस्था सज्जा अस्ति।

आधुनिकसुविधा रॉकेटस्य परिकल्पना, निमार्णं, एकीकरणं

ब्रह्मास्त्र ›› नव देहली

गतवर्षस्य नवम्बरमासे प्रधानमन्त्री नरेन्द्रमोदी हैदराबादनगरे स्काईरूट् एयरोस्पेस् इत्यस्य अत्याधुनिकस्य 'इन्फिनिटी कैम्पस' इत्यस्य उद्घाटनं कृतवान्। अस्मिन् कार्यक्रमे सः कम्पनीयाः प्रथमं कक्षा रॉकेट् विक्रम-१ इति अपि अनावरणं कृतवान्। प्रायः २,००,००० वर्गफीट् व्याप्ता एषा आधुनिकसुविधा रॉकेटस्य परिकल्पना, निमार्णं, एकीकरणं, परीक्षणं च कर्तुं विकसिता अस्ति। कम्पनी दावान् करोति यत् अस्मिन् सुविधायां प्रतिमासं एकं कक्षीयं रॉकेटं उत्पादयितुं क्षमता अस्ति, येन भविष्ये व्यावसायिकप्रक्षेपणसेवासु त्वरितता भविष्यति।

राशिफल

मेष : आज डेडलाइन के भीतर टास्क कंप्लीट कर लेने की सलाह दी जाती है। किसी भी बहस में पड़ने से बचें।

वृषभ : दिन थोड़ा बिजी-बिजी रहने वाला है। कामकाज के चक्कर में अपनी पर्सनल लाइफ से समझौता करना ठीक नहीं है।

मिथुन : आज ऑफिस की पॉलिटिक्स आपके लिए नेगेटिव साबित हो सकती है। पॉजिटिव सोच बनाकर रखें।

कर्क : आज कार्यालय में अतिरिक्त जिम्मेदारियां मिल सकती हैं। वर्क लाइफ बैलेंस मेंटेन करके आगे बढ़ें।

सिंह : आज के दिन व्यापार, सेहत, पैसों का मामला या हो लव लाइफ बड़े चेंज के लिए तैयार हो जाएं।

कन्या : आज इन्वेस्टमेंट को लेकर स्ट्रेटजी बनाने पर ध्यान दें। फिट रहने पर फोकस रखें।

तुला : आपका दिन थोड़ा सा स्ट्रेस भरा साबित हो सकता है। धन का आगमन होगा लेकिन खर्च बढ़ने की संभावना भी ज्यादा है।

वृश्चिक : आज के दिन दिन रोमांटिक रहेगा। आज का आपका दिन पॉजिटिव एनर्जी से भरपूर रहने वाला है।

धनु : एक शानदार दिन के लिए तैयार हो जाएं। घर में खुशियों का माहौल रहेगा। विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं।

मकर : आज किसी पुराने इन्वेस्टमेंट से मनचाहा रिटर्न नहीं मिलेगा। अपनी बॉडी को फिट रखने के लिए योग ट्राई करें।

कुंभ : आज अपने पार्टनर के साथ रोमांटिक डेट प्लान करें। खर्च को इस वक्त कंट्रोल करने की जरूरत है।

मीन : दिन काफी बेहतरीन साबित हो सकता है। करियर के मामले में महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट की जिम्मेदारी आपको दी जा सकती है।

ज्योतिष/वास्तु

राहु नक्षत्र गोचर के बाद इन 4 राशियों के सामने आ सकती हैं चुनौतियां, धन हानि के संकेत

राहु का धनिष्ठा नक्षत्र में गोचर हो चुका है। वैदिक ज्योतिष के अनुसार इसका प्रभाव कई राशियों के जीवन में चुनौतियां और आर्थिक उतार-चढ़ाव ला सकता है।

राहु का धनिष्ठा नक्षत्र में गोचर 20 जून को हो चुका है, और इसके प्रभाव को ज्योतिषीय दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। इस परिवर्तन के बाद कुछ राशियों पर इसका मिला-जुला असर देखने को मिल सकता है। विशेष रूप से वृषभ, मिथुन, सिंह और वृश्चिक राशि के जातकों के लिए यह समय थोड़ा संवेदनशील माना जा रहा है, जहां मानसिक भ्रम, अनिश्चितता और आर्थिक मामलों में उतार-चढ़ाव जैसी स्थितियां बन सकती हैं। ऐसे में हर निर्णय सोच-समझकर लेना और किसी भी तरह के जोखिम से बचना ही बेहतर रहेगा, ताकि आने वाली चुनौतियों का सामना संतुलन के साथ किया जा सके।

वृषभ राशि – वृषभ राशि वालों के लिए यह राहु गोचर आर्थिक दृष्टि से चुनौतीपूर्ण समय लेकर आ सकता है। इस अवधि में अचानक खर्च बढ़ सकते हैं और धन से जुड़ी अनिश्चितता परेशान कर सकती है। आमदनी की तुलना में खर्च अधिक होने की स्थिति बन सकती है, जिससे बजट बिगड़ सकता है। कई बार अनचाहे खर्च या पारिवारिक जरूरतों के कारण आर्थिक दबाव महसूस होगा। इस समय उधार लेने या किसी पर निर्भर होने की स्थिति भी बन सकती है, इसलिए हर वित्तीय निर्णय बहुत सोच-समझकर लेना जरूरी रहेगा।

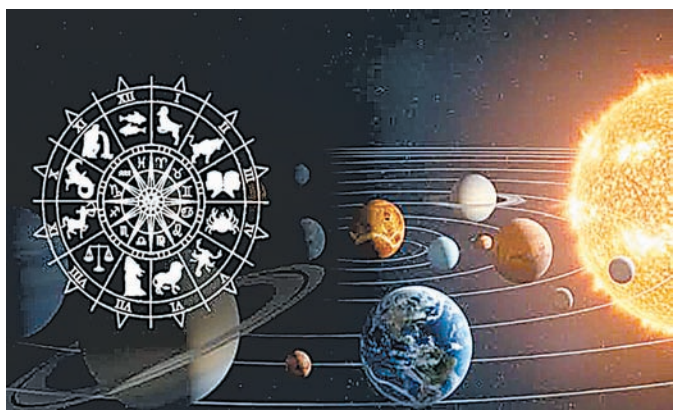

मिथुन राशि – मिथुन राशि के जातकों के लिए यह गोचर कार्यक्षेत्र और मानसिक स्थिति दोनों में उतार-चढ़ाव लेकर आ सकता है। नौकरी में दबाव बढ़ सकता है और काम का बोझ मानसिक तनाव का कारण बन सकता है। व्यापार से जुड़े लोगों को भी अस्थिरता और अनिश्चित परिणामों का सामना करना पड़ सकता है। इस समय निर्णय लेने में भ्रम की स्थिति बन सकती है, जिससे गलत फैसले होने का खतरा रहेगा। इसलिए धैर्य बनाए रखना और किसी भी बड़े बदलाव से पहले अच्छी तरह विचार करना जरूरी होगा।

सिंह राशि– सिंह राशि वालों के लिए यह समय करियर और सामाजिक संबंधों में थोड़ा तनावपूर्ण हो सकता है। कार्यस्थल पर जिम्मेदारियां बढ़ सकती हैं और दबाव अधिक महसूस होगा। सहकर्मियों या वरिष्ठों के साथ गलतफहमी की संभावना भी बन सकती है, जिससे माहौल तनावपूर्ण हो सकता है। हालांकि अधूरे कार्य पूरे होने के योग भी बन रहे हैं, लेकिन मानसिक रूप से बेचैनी बनी रह सकती है। इस समय वाणी और व्यवहार में संयम रखना बहुत जरूरी रहेगा।

वृश्चिक राशि– वृश्चिक राशि के लिए यह राहु गोचर मानसिक और आर्थिक दोनों स्तरों पर अस्थिरता ला सकता है। मन में बेचैनी, तनाव और ओवरथिंकिंग जैसी स्थिति बढ़ सकती है। आर्थिक मामलों में अचानक खर्च या धन हानि की संभावना भी बन सकती है, जिससे चिंता बढ़ सकती है। इस समय कोई भी निर्णय भावनाओं में आकर नहीं लेना चाहिए। संयम और धैर्य बनाए रखना ही इस अवधि में सबसे बड़ा सहारा साबित होगा।

डिप्रेशन और तंगी झेलने वाले मार्कस विलिस ने पत्नी के कहने पर विम्बलडन में वापसी की

फेडरर को हराने वाला 'कल्ट हीरो' 10 साल बाद लौटा

ब्रह्मास्त्र ›› लंदन

खेल की दुनिया में कुछ कहानियां इतनी फिल्मी होती हैं कि उन पर यकीन करना मुश्किल होता है। ऐसी ही एक कहानी है ब्रिटेन के 35 वर्षीय टेनिस खिलाड़ी मार्कस विलिस की।

2016 में दुनिया के 772वें नंबर के खिलाड़ी विलिस ने क्वालिफायर से सफर शुरू कर विम्बलडन में रोजर फेडरर के खिलाफ मैच खेला था। हालांकि, वे मैच सीधे सेटों में हार गए थे, लेकिन फेडरर के सिर के ऊपर से लगाए गए उनके एक जादुई लॉब शॉट ने उन्हें दुनिया भर में मशहूर कर दिया था। एक दशक बाद, विलिस फिर से विम्बलडन में लौटे हैं, लेकिन बिल्कुल नए रूप और नई भूमिका में।

जब अरबपति खिलाड़ी फेडरर से भिड़े थे जंकफूड के शौकीन विलिस- 10 साल पहले मुकाबला दो अलग-अलग दुनिया के लोगों के बीच था। एक तरफ दुनिया के सबसे अमीर खिलाड़ियों में शामिल फेडरर थे, तो दूसरी तरफ विलिस, जिन्होंने उस पूरे साल टेनिस से सिर्फ 24 हजार रुपए कमाए थे। वे अनफिट थे, जंक फूड के शौकीन थे और खेल छोड़ने वाले थे, लेकिन उनकी गर्लफ्रेंड ने उन्हें खेलते रहने के लिए मनाया था। फेडरर से मैच के बाद उन्हें कुछ समय तो खूब शोहरत मिली, टीवी पर इंटरव्यू हुए, लेकिन जल्द ही यह जादू खत्म हो गया। लगातार लगने वाली चोटों और डिप्रेशन के कारण विलिस ने साल 2018 में टेनिस को पूरी तरह अलविदा कह दिया।

अब जिंदगी में ड्रामा कम, जिम्मेदारी ज्यादा

साल 2020 में कोरोना के दौरान जब पैसों की भारी किल्लत हुई, तो परिवार चलाने के लिए इस खिलाड़ी ने अपने भाई की कंस्ट्रक्शन कंपनी में ईंट बिछाने का काम किया। कुछ समय बाद जब स्थितियां बदलीं, तो एक पारिवारिक मित्र ने उनके पेशेवर कमबैक का खर्च उठाने का फैसला किया। विलिस खुद दोबारा खेलने को लेकर दुविधा में थे, लेकिन पत्नी जेनी ने उनसे कहा, जाओ और खेलो, जिंदगी में ऐसा मौका दोबारा नहीं मिलेगा। पत्नी के इसी भरोसे ने उन्हें फिर से कोर्ट पर उतारा। इस बार उन्होंने सिंगल्स के बजाय खुद को डबल्स खिलाड़ी के रूप में ढाला। अब वह दुनिया के 64वें नंबर के डबल्स खिलाड़ी हैं।

अब 35 वर्षीय विलिस चार बच्चों के पिता हैं। उनका पूरा दिन बच्चों को स्कूल छोड़ने, उनकी एक्टिविटीज और होमवर्क कराने में बीतता है। टेनिस के साथ-साथ वह अपना एक पॉडकास्ट भी चलाते हैं। विलिस कहते हैं, अब मेरी जिंदगी में ड्रामा कम और गंभीरता ज्यादा है। मैं बस एक बेहतर खिलाड़ी, अच्छा पति और पिता बनने की कोशिश कर रहा हूं। फेडरर के खिलाफ उस मैच के अनुभव ने मुझे आज वो इंसान बनने में मदद की है, जो मैं हूं।

साई सुदर्शन का शतक, पडिक्कल के साथ 181 रन जोड़े

ब्रह्मास्त्र ›› गॉल

भारत-अ ने श्रीलंका-अ के खिलाफ दूसरे अनऑफिशियल टेस्ट में वापसी कर ली है। दूसरे दिन का खेल खत्म होने तक भारत-अ ने पहली पारी में 1 विकेट पर 247 रन बना लिए हैं। साई सुदर्शन 104 और देवदत्त पडिक्कल 94 रन बनाकर नाबाद हैं। दोनों के बीच दूसरे विकेट के लिए 181 रन की साझेदारी हो चुकी है। भारत-अ अभी श्रीलंका-अ के पहली पारी के स्कोर से 119 रन पीछे है। इससे पहले गॉल में श्रीलंका-अ ने अपनी पहली पारी में 366 रन बनाए। कप्तान साहन अराच्चिगे ने शानदार 127 रन की पारी खेली। भारत-अ की ओर से गुरनूर बराड़ और सारांश जैन ने 4-4 विकेट लिए, जबकि यश ठाकुर को 2 सफलता मिली। भारत-अ की शुरूआत अच्छी रही। अमन मोखाडे और साई सुदर्शन ने पहले विकेट के लिए 66 रन जोड़े। मोखाडे 48 गेंदों में 38 रन बनाकर केशरा नुवांथा का शिकार बने। इसके बाद सुदर्शन ने देवदत्त पडिक्कल के साथ पारी संभाली। दोनों बल्लेबाजों ने दूसरे विकेट के लिए 181 रन की नाबाद साझेदारी कर डाली।

भारत से वनडे सीरीज के लिए इंग्लैंड टीम घोषित

कोल्स को पहली बार मौका जोफ्रा आर्चर की वापसी

ब्रह्मास्त्र ›› नई दिल्ली

भारत के खिलाफ होने वाली तीन मैचों की वनडे सीरीज के लिए इंग्लैंड ने 16 सदस्यीय टीम का ऐलान कर दिया है। ससेक्स के ऑलराउंडर जेम्स कोल्स को पहली बार वनडे टीम में जगह मिली है। वहीं तेज गेंदबाज जोफ्रा आर्चर की करीब आठ महीने बाद वनडे टीम में वापसी हुई है। उन्होंने आखिरी वनडे नवंबर 2025 में खेला था।

टीम की कप्तानी हैरी ब्रूक करेंगे। तेज गेंदबाज जोश टंग को भी वनडे टीम में पहली बार शामिल किया गया है। इसके अलावा गस एटकिंसन और साकिब महमूद भी श्रीलंका दौरा मिस करने के बाद टीम में लौटे हैं।

श्रीलंका दौरे पर गई टीम की तुलना में इंग्लैंड ने चार बदलाव किए हैं। जेम्स कोल्स, जोफ्रा आर्चर, गस एटकिंसन और साकिब महमूद को टीम में शामिल किया गया है। वहीं ब्रायडन कार्से, जैक क्रॉली, जेमी ओवरटन और ल्यूक वुड को बाहर किया गया है।

14 जुलाई से शुरू होगी सीरीज

भारत और इंग्लैंड के बीच तीन मैचों की वनडे सीरीज का पहला मुकाबला 14 जुलाई को एजबेस्टन में खेला जाएगा। दूसरा मैच 16 जुलाई को कार्डिफ और तीसरा व अंतिम वनडे 19 जुलाई को लॉर्ड्स में होगा।

इंग्लैंड की वनडे टीम

हैरी ब्रूक (कप्तान), रेहान अहमद, जोफ्रा आर्चर, गस एटकिंसन, टॉम बैंटन, जैकब बेथेल, जोस बटलर, जेम्स कोल्स, सैम करन, लियाम डॉसन, बेन डकेट, विल जैक्स, साकिब महमूद, आदिल राशिद, जो रूट और जॉश टंग।

भारतीय टीम में कोहली की वापसी

21 जून को भारतीय टीम का ऐलान हुआ था। टीम के कप्तान शुभमन गिल हैं। श्रेयस अय्यर को उपकप्तानी दी गई है। विराट कोहली और रोहित शर्मा भी स्क्वॉड का हिस्सा हैं। कोहली चोटिल होने की वजह से अफगानिस्तान सीरीज नहीं खेल पाए थे।

खबर एक नजर...

मेघनगर से 24 घंटे बाद मिली लापता हुई दो बालिका

उज्जैन। थांदला से मजदूरी करने उज्जैन आए परिवार की दो बालिका नीलगंगा थाना क्षेत्र की निमाणार्धीन बिल्डिंग से लापता हो गई थी। परिजनों ने पुलिस को शिकायत दर्ज कराई। मामला 15 साल और 13 साल की बालिका से जुडा होने पर पुलिस में तकनीकी साक्ष्य के आधार पर तलाश शुरू की। एक बालिका इंस्टाग्राम चलाती थी जिसका डेटा खंगाला गया। पता चला कि झाबुआ के मेघनगर में रहने वाले युवक के संपर्क में थी। लोकेशन के आधार पर पुलिस मेघनगर पहुंची और 24 घंटे में दोनों बालिकाओं को सुरक्षित दस्तयाब कर लिया। दोनों बालिका के साथ पुलिस युवक को भी उज्जैन लेकर आई है। बालिकाओं के बयान दर्ज किए गए हैं। फिलहाल दोनों के साथ कुछ गलत होना सामने नहीं आया है। एएसआई उधमसिंह राठौड़ ने बताया कि दोनों बालिकाओं की काउंसलिंग कराई जा रही है। सिर्फ इतना सामने आया कि 15 वर्षीय बालिका की पहचान इंस्टाग्राम पर हुई थी। युवक भी मजदूरी करता है। 2 दिन पहले युवक उज्जैन आया था और दोनों बालिकाओं को अपने साथ ले गया था। युवक भी नाबालिग होना सामने आया है इसके खिलाफ वैधानिक कार्रवाई की जाएगी।

नजरपुर से गिरफ्त में आया ड्रग्स सप्लाय करने वाला

उज्जैन। सावराखेड़ी पंचमुखी हनुमान मंदिर के पास से गुरुवार को पुलिस ने ऑटो क्रमांक एमपी 13 आर 5205 में सवार बेगमपुरा के रहने वाले शादाब खान और दाऊद खान को गिरफ्तार किया था। जिनके पास से 112.35 ग्राम एमडी ड्रग्स बरामद की गई थी। दोनों को रिमांड पर लिया गया था। पूछताछ में नजरपुर के युवक द्वारा ड्रग्स उपलब्ध कराना बताया गया था। शुक्रवार-शनिवार रात पुलिस की टीम नजरपुर पहुंची और ड्रग्स सप्लाई करने वाले रमजान पिता अजमेरी शाह 30 साल को गिरफ्तार कर उज्जैन लाई। पूछताछ में पता चला कि राजस्थान का युवक नजरपुर आकर उसे ड्रग्स उपलब्ध कराता था। रमजान से उसके संबंध में स्पष्ट जानकारी नहीं मिल पाई। शनिवार दोपहर ड्रग्स के साथ पकड़े दोनों युवक और सप्लाय करने वाले को न्यायालय में पेश किया गया जहां से न्यायिक हिरासत में जेल भेजा गया है।

गाय से टकराकर घायल हुये बैंककर्मी की मौत

उज्जैन। आदर्शनगर में रहने वाला तबरेज पिता इकबाल अंसारी ग्राम कनसिया स्थित भारतीय स्टेट बैंक में हेड क्लर्क था। चार दिन पहले सुबह के समय वह महानंदानगर स्थित स्विमिंगपूल आया था। जहां से वापस लौटते समय सर्किट हाउस के सामने बाइक के सामने गाय आ गई थी। टकराने पर वह गंभीर रूप से घायल हुआ था जिसे निजी अस्पताल से इंदौर रैफर किया गया था। बॉम्बे हॉस्पिटल में चले उपचार के बाद शुक्रवार-शनिवार रात तबरेज की मौत हो गई। गाय से बाइक टकराने का एक हादसा शुक्रवार रात तराना में हुआ। माकड़ोन के ग्राम नांदेड़ में रहने वाला रामबाबू 28 साल अपनी भाभी को लेने तराना तोबडीखेड़ा जा रहा था। रास्ते में गाय के झुंड से बाइक टकरा गई। गंभीर चोट लगने पर उसे तराना से उज्जैन चरक अस्पताल रैफर किया गया है।

बिजली ऑपरेटर और चौकीदार की करंट से मौत

उज्जैन। बिजली विभाग में ग्रिड ऑपरेटर और चौकीदार की करंट लगने से हुई मौत के दो मामले सामने आए हैं। दोनों घटना में नीलगंगा थाना पुलिस द्वारा पोस्टमार्टम कराया गया है। पहला मामला इंदौररोड स्थित ग्राम पंथपिपलाई का था। यहां पर सुनील पिता चंपालाल सोलंकी 32 वर्ष ग्राम किठोदा सावेर बिजली संधारण कार्य के लिए पोल पर चढ़ा था अचानक करंट का झटका लगने पर नीचे गिर गया था। उसे 2 दिन पहले निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया था जहां शुक्रवार रात उसकी मौत हो गई। परिवार ने बिजली कंपनी के अधिकारी और ठेकेदार पर लापरवाही के आरोप लगाए। दूसरा मामला ग्राम दाऊदखेड़ी से सामने आया। यहां पर लीलाधर पिता मांगीलाल 60 वर्ष निवासी ग्राम गुदरिया बर्मा सीहोर खेत पर चौकीदारी का काम करता था। रात में बारिश की वजह से खेत में पानी भर गया था इस दौरान वह पैदल घूम रहा था तभी उसे करंट लगा और उसकी मौत हो गई। दोनों मामलों में पुलिस ने पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंपे और मामले की जांच शुरू की है।

कच्ची शराब बेचने निकला ताजपुर का युवक पकड़ाया

उज्जैन। हाथभट्टी पर बनी कच्ची शराब बेचने निकले युवक को सर्कल भ्रमण के दौरान पंवासा थाना प्रधान आरक्षक शेखर हरियाला ने गरोठ ब्रिज के नीचे पुरानी कलाली के पास से पकड़ा। उसके पास से प्लास्टिक की केन में भरी 5 लीटर कच्ची शराब मिली है। प्रधान आरक्षक के अनुसार आरोपी का नाम विनोद उर्फ रावण पिता हरदेव कुमावत 35 साल निवासी लखेड़ा मोहल्ला ताजपुर है। जिसके खिलाफ आबकारी अधिनियम का प्रकरण दर्ज कर शनिवार को कोर्ट पेश कर जेल भेजा गया है।

तेज बहाव में डूबा 4 बच्चों के पिता, 36 घंटे तक चली सर्चिंग, 5 घंटे बाद मिली थी बाइक

चंबल नदी से मिला ग्राम सहायक सचिव का शव

ब्रह्मास्त्र ▸▸ उज्जैन

नाले पर बनी पुलिया पार करते समय पानी के तेज बहाव में डूबे ग्राम पंचायत सहायक सचिव का शव 36 घंटे की सर्चिंग के बाद चंबल नदी से शनिवार सुबह मिल गया। सहायक सचिव 4 बच्चों का पिता था।

इंगोरिया थाना क्षेत्र ग्राम गावड़ी लोधा में रहने वाला सूर्यप्रताप पिता करतारसिंह सोनगरा ग्राम में पंचायत सहायक सचिव था। गुरूवार देर शाम पंचायत से घर लौटते समय गांव के रास्ते पर बनी पुलिया पार करते समय पानी के तेज बहाव में बाइक सहित नाले में गिर गया था। ग्रामीणों ने उसे डूबते देखा तो पुलिस और परिजनों को सूचना दी थी। रात 8 बजे के लगभग हुई घटना के बाद थाना प्रभारी दिपेश व्यास, एएसआई दिनेश निनामा टीम के साथ पुलिया पर पहुंचे थे और स्थानीय गोताखोरों की मदद से सर्चिंग शुरू की थी, पानी का बहाव तेज होने पर कुछ पता नहीं चल पा रहा था। रात में अंधेरा काफी गहरा गया था, इस बीच डेढ़ बजे के लगभग उसकी बाइक का पता चल गया था। शुक्रवार सुबह 6 बजे उज्जैन से होमगार्ड की एनडीआरएफ टीम ने पहुंचकर सर्चिंग शुरू की थी, लेकिन रात 10 बजे तक कुछ पता नहीं चला। नाला चंबल से मिलता है, शनिवार सुबह 7 बजे होमगार्ड टीम ने चंबल नदी में 2 किलोमीटर आगे सर्चिंग शुरू की, 9 बजे के लगभग सहायक सचिव का शव मिल गया। होमगार्ड डिस्ट्रिक्ट कमांडेंट संतोष कुमार जाट ने बताया कि 12 सदस्यों की टीम 2 दिनों से सभी जरूरी संसाधनों के साथ सर्चिंग अभियान में लगी थी।

मन्नत के बाद 8 माह पहले हुआ पुत्र

इंगोरिया थाना प्रभारी दिपेश व्यास ने बताया कि शव मिलने के बाद मामले में मर्ग कायम कर पोस्टमार्टम कराया गया है। परिजनों से चर्चा में सामने आया कि सूर्यप्रताप 4 बच्चों का पिता था। उसकी 3 बेटियां थी, पुत्र के लिये काफी मन्नत की थी, 8 माह पहले पुत्र का जन्म हुआ था। परिवार के माता-पिता और एक भाई है। सूर्यप्रताप सिंह मिलनसार था। घटना से पहले उसने गांव के एक युवक को अपनी बाइक पर लिफ्ट भी दी थी और उसे उतारने के बाद काफी देर तक बातचीत भी करता रहा था। उसके बाद नाले पर बनी पुलिया से अपने घर की ओर जा रहा था, लेकिन तेज बहाव में डूब गया था।

मोबाइल से हुई क्षिप्रा में डूबे उत्तरप्रदेश के युवक की पहचान

ब्रह्मास्त्र ▸▸ उज्जैन

शिप्रा नदी से मिली युवक की लाश की पहचान उसके पास मिले मोबाइल के आधार से कर ली गई। युवक उत्तरप्रदेश का रहने वाला था और अहमदाबाद जाने का बोलकर घर से निकला था। परिजन पोस्टमार्टम के बाद शव उत्तरप्रदेश लेकर गए हैं।

महाकाल थाना प्रधान आरक्षक वासुदेव रावल ने बताया कि शुक्रवार को शिप्रा नदी में एक युवक की लाश बहती हुई कुछ लोगों द्वारा देखी गई थी। सूचना मिलने पर पुलिस ने गुरुद्वारा घाट के पास से युवक की लाश बाहर निकाल ली थी। लाश 2 दिन पुरानी प्रतीत हो रही थी उसके पास से पहचान का कोई दस्तावेज नहीं मिला लेकिन जेब में रखा मोबाइल बरामद हुआ था। पानी में डूबने से मोबाइल बंद हो गया था जिसकी सिम कार्ड को दूसरे मोबाइल में डालकर उसमें दर्ज नंबरों पर कॉल किए गए। जिसके आधार पर पता चला कि मृतक युवक कल्लू पिता चंद्रभान गौतम 26 साल निवासी लोहरोली ठुकराई संत कबीर नगर उत्तरप्रदेश का रहने वाला है। खबर मिलने पर शनिवार सुबह उत्तरप्रदेश से चचेरा भाई और कुछ रिश्तेदार उज्जैन पहुंचे जिनकी मौजूदगी में पुलिस द्वारा पोस्टमार्टम कराया गया। चचेरे भाई अमरजीत ने बताया कि वह उत्तरप्रदेश से अहमदाबाद में रहने वाली जीजा के यहां जाने का बोलकर निकला था। 2 दिन से उसका मोबाइल भी बंद आ रहा था। वह अहमदाबाद भी नहीं पहुंचा था। कल्लू मजदूरी करता था। पोस्टमार्टम के बाद शव उत्तर प्रदेश ले जाया गया है। प्रधान आरक्षक रावल के अनुसार शिप्रा का जलस्तर बड़ा होने की वजह से मृतक की बॉडी बहती हुई गुरुद्वारा घाट तक पहुंची है। लेकिन यह स्पष्ट नहीं हो पाया कि वह अहमदाबाद के लिए निकला था उज्जैन क्यों पहुंचा, यह जांच का विषय बन गया है।

22.49 क्विंटल मादक पदार्थ का नष्टिकारण

ब्रह्मास्त्र ▸▸ उज्जैन

संभाग के चार जिलों में पुलिस द्वारा अवैध मादक पदार्थ के 117 प्रकरण दर्ज किए गए थे। जिसमें 22.49 क्विंटल मादक पदार्थ 1.80 करोड रुपए का जप्त किया गया था। चारों जिलों में जप्त मादक पदार्थ का नष्टिकारण किया गया है।

पुलिस विभाग की ओर से मिली जानकारी अनुसार प्रदेश को नशा मुक्त बनाने के लिए चलाए जा रहे अभियान में संभाग की पुलिस लगातार अवैध मादक पदार्थ का कारोबार करने वालों को गिरफ्तार कर मादक पदार्थ बरामद करने की कार्रवाई कर रही है। पिछले कुछ साल में उज्जैन, देवास, शाजापुर एवं आगर-मालवा जिलों के कुल 117 प्रकरणों में लगभग 22 क्विंटल 45 किलो 915 ग्राम मादक पदार्थ पुलिस द्वारा जप्त किया गया था। जिसकी अंतर्राष्ट्रीय कीमत 1.80 करोड़ थी। सभी प्रकरणों में न्यायालय प्रक्रिया पूरी होने के बाद मादक पदार्थ को नष्ट करने की कार्रवाई की गई है। उक्त कार्यवाही में जिला उज्जैन के 39 प्रकरणों में जब्त 3 क्विंटल 66 किलो 988 ग्राम मादक पदार्थ नष्टीकरण किया गया है। एक प्रकरण में जब्त 902 ग्राम अफीम को नियमानुसार सुरक्षित भंडारण के लिए अधिकृत भंडारण केंद्र में जमा कराया गया।बड़ूग विनष्टीकरण समिति द्वारा एनडीपीएस एक्ट के 112 प्रकरणों में जब्त 2245.915 किलोग्राम मादक पदार्थों को विक्रम सीमेंट फैक्ट्री, खोर-नयागांव (जिला नीमच) की उच्च तापमान वाली भट्टी में पर्यावरणीय मानकों का पालन करते हुए पूर्णतः नष्ट किया गया। वहीं 5 गंभीर प्रकरणों में जब्त 3.967 किलोग्राम अफीम को सुरक्षित भंडारण हेतु नीमच स्थित अल्कालाइड फैक्ट्री में जमा कराया गया। कार्रवाई को पुलिस उप महानिरीक्षक, उज्जैन रेंज एवं अध्यक्ष, ड्रग विनष्टीकरण समिति नवनीत भसीन के मार्गदर्शन में मध्यप्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड उज्जैन के वैज्ञानिक अधिकारी एस.के. गुप्ता की उपस्थिति में विधिसम्मत रूप से संपन्न कराई गई।

बस का पीछा करते वक्त कार से टकराई बाइक

दुर्घटना में एक की मौत, दूसरा गंभीर घायल

ब्रह्मास्त्र ▸▸ उज्जैन

रात में बस छूट जाने पर उसे पकड़ने के लिये बाइक से पीछा कर रहे 2 लोग उन्हेल मार्ग पर कार से टकरा गये। दोनों को गंभीर हालत में अस्पताल लाया गया, जहां एक की मौत होना सामने आया। दूसरे का उपचार चल रहा है।

भैरवगढ़ थाना पुलिस ने बताया कि रात में उन्हेल मार्ग पर बाइक और कार के बीच टक्कर होने की खबर मिलने पर पुलिस घटनास्थल पहुंची थी। बाइक सवार 2 लोग गंभीर घायल थे, जिन्हे एम्बुलेंस से चरक अस्पताल पहुंचाया गया। कुछ देर बाद पता चला कि घायलों में शामिल एक की मौत हो चुकी है। पुलिस अस्पताल पहुंची और घायल से पूछताछ की। उसका नाम लालसिंह निवासी शाजापुर सामने आया। मृतक गणपत पिता बाबूसिंह 35 साल निवासी जोधपुर राजस्थान था। घायल ने बताया कि दोनों मक्सी टाईल्स फैक्ट्री में काम करते है। गणपत अपने घर राजस्थान जा रहा था उसे नानाखेड़ा बस स्टेंड छोड़ने आया था, लेकिन वीडियो कोच बस निकल चुकी थी। उसी को पकड़ने के लिये बाइक से पीछा करने का प्रयास कर रहे थे। रात में मृतक के परिजनों को सूचना दी गई। शनिवार सुबह उनके आने पर पोस्टमार्टम कराया गया। दुर्घटना के बाद चालक कार लेकर मौके से भाग निकला था। जिसका पता लगाने के लिये दुर्घटनास्थल के आसपास लगे कैमरों के फुटेज देखे जायेगें।

महाकाल मंदिर की सुरक्षा बढ़ाने की मांग

ब्रह्मास्त्र ▸▸ उज्जैन

देवास में जैश-ए-मोहम्मद से जुड़े एक संदिग्ध आतंकी की गिरफ्तारी के बाद विश्व प्रसिद्ध श्री महाकालेश्वर मंदिर की सुरक्षा पर चिंता बढ़ गई है। इस घटनाक्रम के बाद उज्जैन सांसद अनिल फिरोजिया ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को पत्र लिखा है। उन्होंने महाकाल मंदिर में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) की तैनाती की मांग दोहराई है।

सांसद फिरोजिया ने अपने पत्र में कहा है कि महाकाल मंदिर देश के प्रमुख धार्मिक स्थलों में से एक है, जहां हर साल करोड़ों श्रद्धालु दर्शन के लिए आते हैं। वर्ष 2028 में होने वाले सिंहस्थ महापर्व के दौरान श्रद्धालुओं की संख्या में कई गुना वृद्धि होगी। इसलिए, अभी से सुरक्षा व्यवस्था को राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप मजबूत करना आवश्यक है। फिरोजिया ने बताया कि उन्होंने लगभग तीन महीने पहले भी केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को पत्र लिखकर महाकाल मंदिर की सुरक्षा में सीआरपीएफ तैनात करने की मांग की थी। उनके पत्र के बाद केंद्र सरकार की एक टीम उज्जैन पहुंची थी। इस टीम ने मंदिर परिसर, प्रवेश मार्गों और मौजूदा सुरक्षा व्यवस्था का निरीक्षण किया था, साथ ही स्थानीय प्रशासन और पुलिस अधिकारियों के साथ बैठक कर सुरक्षा का आकलन भी किया था। सांसद ने जोर दिया कि देवास से संदिग्ध आतंकी की गिरफ्तारी और उसके विभिन्न राज्यों से जुड़े नेटवर्क की जानकारी सामने आने के बाद धार्मिक स्थलों की सुरक्षा को लेकर सतर्कता और बढ़ गई है।

बदबू आने पर कुएं में मिला गोवंश, 4 आरोपी हिरासत में

ब्रह्मास्त्र ▸▸ उज्जैन

खेत में बने कुएं से बदबू आने पर किसान की सूचना पर पुलिस पहुंची और कुएं की तलाशी ली तो प्लास्टिक की पॉलिथीन में भरा गोवंश बरामद हो गया। मामला गौ हत्या से जुदा होने पर पुलिस ने पड़ताल शुरू की और कुछ घंटे में ही चार आरोपियों को हिरासत में ले लिया।

उन्हेल थाना उपनिरीक्षक मांगीलाल मालवीय ने बताया कि शनिवार दोपहर ग्राम बेजनावदा खेडी रोड पर खेत में बने कुएं से बदबू आने पर किसान परमानंद द्वारा मामले की सूचना पुलिस को दी गई थी। पुलिस मौके पर पहुंची और कुएं की तलाशी ली गई। जिसमें से एक प्लास्टिक की थैली बाहर निकली गई। थैली में गाय के बछड़े का कटा हुआ सिर और पैर होना सामने आए। मामला गौ हत्या का होने पर जांच शुरू की गई। इस दौरान जानकारी मिली कि कुछ युवक दो-तीन दिन पहले क्षेत्र में दिखाई दिए थे। पुलिस ने उनकी तलाश शुरू की और कुछ घंटे बाद ही मथ्थू पिता मंजू खान उर्फ बकरी वाला, निवासी पाटन 32 वर्ष, उसके पुत्र बालअपचारी, के साथ राशीद मेमन पिता मोहम्मद उस्मान शाह 32 वर्ष निवासी कस्बा उन्हेल और उसके 16 वर्षीय पुत्र को हिरासत में ले लिया। पूछताछ में चारों ने गाय का बछड़ा खरीद कर उसका वध करने और मांस बेचने की बात कबूल कर ली। आरोपियों ने बताया कि तीन-चार दिन पहले बछड़ा काटकर उसका सिर और पैर कुएं में फेक थे। उपनिरीक्षक के अनुसार चारों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है रविवार को न्यायालय में पेश किया जाएगा।

महाकाल और कालभैरव मंदिर में अवैध वसूली के विरोध में आंदोलन की चेतावनी

ब्रह्मास्त्र ▸▸ उज्जैन

अयोध्या के राम मंदिर में 500 करोड़ रुपये की कथित चोरी और उज्जैन के महाकाल व कालभैरव मंदिर में चल रही अवैध वसूली के विरोध में जिला युवा कांग्रेस ने उग्र आंदोलन की चेतावनी दी है। उज्जैन जिला युवा कांग्रेस अध्यक्ष अर्पित यादव के नेतृत्व में कार्यकताओं ने शांतिपूर्ण प्रदर्शन करते हुए हनुमान चालीसा का पाठ किया और दोषियों पर जल्द कार्रवाई की मांग की। युवा कांग्रेस अध्यक्ष अर्पित यादव ने आरोप लगाया कि खुद को सनातन धर्म की पार्टी बताने वाली भाजपा के राज में उज्जैन से लेकर अयोध्या तक मंदिरों में भ्रष्टाचार हो रहा है।

जलभराव की शिकायतों का तत्काल निराकरण करें - निगम आयुक्त

ब्रह्मास्त्र ▸▸ उज्जैन

शनिवार सुबह हुई बारिश के बीच नगर निगम आयुक्त अभिलाष मिश्रा ने नगर निगम कंट्रोल रूम का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने सॉफ्टवेयर के माध्यम से विभिन्न वार्डों में तैनात दरोगाओं की लाइव लोकेशन की जानकारी ली तथा उपस्थिति रजिस्टर का निरीक्षण किया।

निगम आयुक्त ने सभी वार्ड दरोगाओं को निर्देश दिए कि अतिवृष्टि के दौरान यदि किसी घर में पानी भरने या वार्ड में जलभराव की सूचना प्राप्त होती है, तो नगर निगम के उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करते हुए सुरक्षा मानकों का पालन कर तत्काल समस्या का निराकरण किया जाए।

9 साल बाद गिरफ्त में आया ईंट कंपनी का अकाउंटेंट

40 लाख की ठगी करने वाले पिता-पुत्र अब भी फरार

ब्रह्मास्त्र ▸▸ उज्जैन

ईंट का सौदाकर 40 लाख की धोखाधड़ी के मामले में 9 साल बाद ईंट कंपनी के अकाउंटेंट को अहमदाबाद से गिरफ्तार कर उज्जैन लाया गया है। रिमांड पर पूछताछ के बाद उसे शनिवार को कोर्ट में पेश कर जेल भेजा गया। धोखाधड़ी में शामिल कंपनी के संचालक पिता-पुत्र अब भी फरार है।

माधवनगर थाना पुलिस ने पिछले वर्ष 25 सितंबर को दमदमा स्थित वीएससी कंपनी के संचालक मुकेश कुमार व्यास की शिकायत पर अहमदाबाद की वीके ब्रिक्स कंपनी के संचालक पिता-पुत्र यशवंत प्रजापत और मेहूल प्रजापत के साथ कंपनी के अकाउंटेंट हिमांशु गौर के खिलाफ 40 लाख की धोखाधड़ी का प्रकरण दर्ज किया था। मुकेश कुमार व्यास ने शिकायत में बताया था कि वह मूलरूप से गुजरात अहमदाबाद का रहने वाला है। वर्तमान में उज्जैन से अपनी कंपनी संचालित कर रहा है। वर्ष 2017 में उसने अपनी कंपनी के लिये 5 लाख ईंट का सौंदा (8 रुपए प्रतिनग) अहमदाबाद की वीके ब्रिक्स कंपनी के संचालक यशवंत प्रजापत और उसके पुत्र मेहूल प्रजापत से किया था। 40 लाख रुपए भी दिये थे। पिता-पुत्र ने अकाउंटेंट हिमांशु के माध्यम से ईंट भेजने की बात कहीं थी। हिमांशु ने फर्जी बिल बनाकर भेजे थे, लेकिन ईंट नहीं मिल पाई। कई बार संपर्क करने के बाद भी पिता-पुत्र और अकाउंटेंट सही जवाब नहीं दे रहे है। उन्होने 40 लाख की धोखाधड़ी की है। पुलिस ने मामले की जांच शुरू की थी और 8 साल बाद मामले में धोखाधड़ी का प्रकरण दर्ज किया था। लेकिन वीके ब्रिक्स कंपनी के तीनों आरोपी लगातार फरार होना सामने आ रहे है। कुछ दिन पहले खबर मिलने पर माधवनगर थाना सहायक उपनिरीक्षक एमएस अलावा की टीम को अहमदाबाद रवाना किया गया। जहां से अकाउंटेंट हिमांशु को गिरफ्तार कर उज्जैन लाया गया। जिसे पूछताछ के लिये रिमांड पर लिया गया, इस दौरान सामने आया कि कंपनी संचालक यशवंत प्रजापत और मेहूल प्रजापत ने फर्जी बिल बनाने के लिये कहा था, उसने बिल तैयार कर भेजे थे। उससे फरार पिता-पुत्र की जानकारी ली गई और दोबारा टीम उनकी तलाश में अहमदाबाद पहुंची, लेकिन दोनों फरार होना सामने आये। शनिवार को अकाउंटेंट हिमांशु को रिमांड खत्म होने पर कोर्ट पेश किया। जहां से न्यायिक हिरासत में भेजा गया है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संदीप मेहता द्वारा अवंतिका ऑफसेट 2, महाकाल मंदिर मार्ग, मालीपुरा, उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-संदीप मेहता 9827771777 फोन : 0734-4012777 Email -dainikbrahmastra@gmail.com